

नवधृति

PRGI No. RJBIL/26/A0880



मानवाधिकार

सच साहस न्याय की खबर समाचा

हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष : 1 अंक : 06

सम्पादक: श्रवण पंवार, जयपुर मो.: 9251120059

जयपुर, सितम्बर, 2026

लोकतंत्र में जनता सर्वोपरि



NMS NEWS
सच, साहस, न्याय की खबर
Navdhriti Manavadhikar Samachar
DIGITAL & PRINT MEDIA

www.nms.news

We are at-



E-mail: info@nms.news

— सच • अधिकार • समाज —

आवश्यकता

NMS NEWS
सच, साहस, न्याय की खबर
Navdhriti Manavadhikar Samachar
• DIGITAL & PRINT MEDIA •

देश-प्रदेश में समाचार पत्रिका के विस्तार हेतु
पत्रकार/संवाददाता एवं विज्ञापन एजेंट्स
की आवश्यकता है।

अगर आपको अपने क्षेत्र व देश की समस्याओं को



सामने लाने का जुनून है



पत्रकार के रूप में कार्य करने के इच्छुक हैं



समाज में सकारात्मक परिवर्तन में सहयोग करना चाहते हैं



तो यह आपके लिये एक सुनहरा अवसर है।

हमसे जुड़ें, बदलाव का हिस्सा बनें !



आपको मिलेगा



समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का अवसर



अपनी आवाज को मंच देने का अवसर



पहचान बनाएं, सम्मान पाएं,



करियर में नई ऊंचाइयों को छुएं

संपर्क करें

जिला संवाददाता – तहसील/ब्लॉक रिपोर्टर,
ब्यूरो चीफ

मुख्य कार्यालय :
जयपुर, राजस्थान

9251120059



www.nms.news

“ मानवाधिकार की रक्षा – हमारा संकल्प, आपकी आवाज – हमारी ताकत ”

</> Code. Create. Innovate.

महादेव पंवार



सॉफ्टवेयर इंजीनियर व डेवलपर



Web Development



Frontend Development



Backend Development



Database Management

“ कोड सिर्फ एक काम नहीं,

यह समस्या का समाधान और बेहतर भविष्य का निर्माण है। ”



@mahadevpanwar.dev



समर्पण



नवाचार



तकनीक



उत्कृष्टता

LET'S
BUILD THE
FUTURE
TOGETHER

नवधृति

मानवाधिकार

PRGI No. RJBIL/26/A0880



सच साहस न्याय की खबर समाचा

प्रकाशक — श्रवण पंवार, जयपुर

वर्ष : 01

अंक : 06

दिनांक : सितम्बर, 2026

हिन्दी मासिक पत्रिका
के सदस्य शुल्क का विवरण



सदस्यता शुल्क (वार्षिक)
400/- रुपये पोस्टेज सहित

प्रकाशक एवं सम्पादक
श्रवण पंवार
जयपुर (राजस्थान)

जयपुर कार्यालय
पथ नं. 6, प्लॉट नं-39, नियर खेतान
हॉस्पिटल, विजयवाड़ी, सीकर रोड़,
जयपुर (राज.) 302039
मो.: 9251120059
www.nms.news
E-mail: info@nms.news

कम्प्यूटर डिजाईनिंग
जयते प्रिंटर्स मो.: 7790990770

नोट- समस्त विवाद जयपुर
न्यायालय के अंतर्गत रहेगा

विषय सूची

क्र. सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
01	सम्पादकीय	01
02	साक्षरता: अक्षरों से आगे, जीवन को समझने और बदलने की शक्ति 02	02
03	हिंदी हमारी भाषा, हमारी पहचान और हमारी जिम्मेदारी	05
04	लोकतंत्र: जनता की सरकार या जनता का इंतज़ार? 'लोकतंत्र में जनता सर्वोपरि है।'	08
05	यात्राओं से संवाद, संस्कृतियों से संबंध और विकास की नई राह	11
06	विश्व वृद्धजन दिवस: उम्र नहीं, अनुभव की पूंजी का सम्मान	13
07	गांधी को याद करने से आगे, गांधी को समझने की जरूरत	15
08	बालोतरा जिले को नई पत्रकारिता दिशा देने की पहल	18
09	अनुभव और सामाजिक सरोकार के साथ पत्रकारिता की नई शुरुआत	18
10	राजस्थान संक्षिप्त परिचय	22

स्वत्वाधिकारी, मालिक, प्रकाशक व सम्पादक श्रवण कुमार पंवार के लिए प्रिन्टर्स (मुद्रक)
विजेन्द्र प्रकाश हलचल, विजय पथ, धानी नगर, श्याम नगर, फुलेरा, जयपुर (राजस्थान)
से मुद्रित एवं लखेरा शक्ति क्रियेशन प्रा.लि., सी-1 सुदर्शनपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया,
22 गोदाम, जयपुर (राज.) 302039 से प्रकाशित

जनहित की आवाज, अधिकारों की रक्ष और जिम्मेदार समाज की ओर एक कदम

प्रिय पाठकों,

नवधृति मानवाधिकार समाचार की सितंबर 2026 की मासिक पत्रिका आपके हाथों में सौंपते हुए हमें प्रसन्नता है। प्रत्येक नया अंक हमारे लिए केवल समाचारों और घटनाओं का संकलन नहीं, बल्कि समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को और मजबूत करने का अवसर है।

आज का समय तेजी से बदल रहा है। तकनीक ने सूचनाओं को हमारे हाथों तक कुछ ही क्षणों में पहुंचा दिया है, लेकिन इसी तेजी के बीच सही सूचना, सत्यापन और जिम्मेदार पत्रकारिता का महत्व पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है। समाचार केवल घटना बताने का माध्यम नहीं है; समाचार समाज को जागरूक करने, प्रशासन को जवाबदेह बनाने और आम नागरिक की आवाज को उचित मंच देने का माध्यम भी है।

मानवाधिकार केवल किताबों या कानूनों में लिखे शब्द नहीं हैं। सम्मान के साथ जीवन जीने का अधिकार, समानता का अधिकार, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छ वातावरण, न्याय और अपनी बात रखने की स्वतंत्रता- ये प्रत्येक नागरिक के जीवन से जुड़े मूल अधिकार हैं। जब किसी व्यक्ति या वर्ग के अधिकार प्रभावित होते हैं, तब समाज और मीडिया दोनों की जिम्मेदारी बढ़ जाती है।

हमारा प्रयास है कि नवधृति मानवाधिकार समाचार में प्रकाशित प्रत्येक समाचार जनहित की दृष्टि से उपयोगी हो और समाज में सकारात्मक संवाद को आगे बढ़ाए। हम किसी भी समाचार को केवल सनसनी बनाने के उद्देश्य से नहीं, बल्कि उसके पीछे छिपे वास्तविक सामाजिक प्रभाव को समझने और सामने रखने के उद्देश्य से देखते हैं।

सितंबर का महीना हमें वर्ष के बीते महीनों की उपलब्धियों और कमियों पर विचार करने का अवसर भी देता है। शिक्षा, रोजगार, महिला एवं बाल सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण, ग्रामीण विकास, स्वास्थ्य सेवाएं, सामाजिक समानता और प्रशासनिक पारदर्शिता जैसे विषयों पर निरंतर संवाद आवश्यक है। विकास तभी सार्थक है जब उसका लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे।

हम अपने संवाददाताओं, लेखकों और पाठकों से भी अपेक्षा करते हैं कि वे तथ्यपरक और जिम्मेदार पत्रकारिता को बढ़ावा दें। किसी भी सूचना को साझा करने से पहले उसका सत्यापन करना और किसी व्यक्ति या संस्था के सम्मान एवं अधिकारों का ध्यान रखना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है।

हमारा संकल्प स्पष्ट है-

‘समाचार वही, जो समाज के काम आए; पत्रकारिता वही, जो जनहित में आवाज उठाए।’

हम आशा करते हैं कि सितंबर का यह अंक आपको देश-दुनिया की महत्वपूर्ण घटनाओं के साथ-साथ समाज, मानवाधिकार और जनकल्याण से जुड़े विषयों पर सोचने और सकारात्मक परिवर्तन के लिए प्रेरित करेगा।

आपका विश्वास ही हमारी सबसे बड़ी शक्ति है।

इसी विश्वास के साथ हम आगे भी सत्य, निष्पक्षता और जनहित के मूल्यों के साथ अपनी यात्रा जारी रखेंगे।

—संपादक

(नवधृति मानवाधिकार समाचार)

अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस- 8 सितंबर

साक्षरता : अक्षरों से आगे, जीवन को समझने और बदलने की शक्ति

किसी व्यक्ति के हाथ में किताब हो और उसकी आँखों में उसे पढ़ने की क्षमता- यह दृश्य जितना सामान्य दिखाई देता है, उसके पीछे उतनी ही बड़ी सामाजिक उपलब्धि छिपी होती है। अक्षरों को पहचानना, शब्दों को पढ़ना, अपनी बात लिख पाना और दूसरों की बात समझ पाना हमारे लिए रोजमर्रा की सहज गतिविधियाँ हो सकती हैं, लेकिन दुनिया के करोड़ों लोगों के लिए यह आज भी एक सपना है। इसी वास्तविकता की ओर विश्व का ध्यान आकर्षित करने और साक्षरता के महत्व को रेखांकित करने के लिए प्रत्येक वर्ष 8 सितंबर को अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस मनाया जाता है। साक्षरता का अर्थ केवल 'क' से कबूतर और 'ए' से एप्पल सीख लेना नहीं है। वास्तविक साक्षरता वह क्षमता है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने आसपास की दुनिया को समझ सके, सही और गलत के बीच अंतर कर सके, अपने अधिकारों और कर्तव्यों को जान सके, आवश्यक जानकारी प्राप्त कर सके और अपने जीवन से जुड़े निर्णय स्वयं ले सके। इस अर्थ में साक्षरता व्यक्ति के हाथ में केवल कलम नहीं, बल्कि निर्णय लेने की शक्ति देती है।

साक्षरता क्यों जरूरी है—

कल्पना कीजिए कि किसी व्यक्ति को अस्पताल में डॉक्टर की पर्ची पढ़नी नहीं आती, बैंक में किसी दस्तावेज को समझना नहीं आता, मोबाइल पर आए जरूरी संदेश को पढ़ना संभव नहीं है या सरकारी योजना का फॉर्म भरने के लिए उसे हर बार किसी दूसरे व्यक्ति की सहायता लेनी पड़ती है। ऐसी स्थिति केवल असुविधा पैदा नहीं करती, बल्कि व्यक्ति को दूसरों पर निर्भर भी बना देती है। साक्षरता इस निर्भरता को कम करती है। एक साक्षर व्यक्ति अपने दस्तावेज स्वयं पढ़ सकता है, बैंकिंग सेवाओं का उपयोग कर सकता है, डिजिटल माध्यमों से जानकारी प्राप्त कर सकता है, रोजगार के अवसर तलाश सकता है और सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने के लिए आवश्यक जानकारी समझ सकता है। इसलिए साक्षरता को केवल शिक्षा का प्रारंभिक चरण मानना पर्याप्त नहीं है। यह आत्म सम्मान, आत्मनिर्भरता और सामाजिक भागीदारी का आधार है।

एक साक्षर व्यक्ति, एक जागरूक परिवार—

साक्षरता का प्रभाव केवल एक व्यक्ति तक सीमित नहीं रहता। विशेष रूप से जब परिवार की महिला शिक्षित और जागरूक

होती है, तो उसका सकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ता है। वह बच्चों की शिक्षा के प्रति अधिक सजग होती है, स्वास्थ्य एवं पोषण से संबंधित जानकारी को बेहतर ढंग से समझती है और परिवार के महत्वपूर्ण निर्णयों में सक्रिय भूमिका निभाती है। एक माँ अपने बच्चे की किताब पढ़ती है तो वह केवल शब्द नहीं पढ़ रही होती; वह बच्चे के भविष्य की नींव मजबूत कर रही होती है। इसी तरह जब परिवार का कोई बुजुर्ग पढ़ना सीखता है तो वह उम्र की सीमाओं को चुनौती देते हुए यह संदेश देता है कि सीखने की कोई उम्र नहीं होती।

महिलाओं की साक्षरता: बदलाव की सबसे मजबूत कड़ी—

समाज की प्रगति का आकलन केवल आर्थिक विकास से नहीं किया जा सकता। वास्तविक विकास तब होता है जब समाज के प्रत्येक वर्ग को समान अवसर मिलें। महिलाओं की साक्षरता इस दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण है। एक शिक्षित महिला अपने अधिकारों को बेहतर ढंग से समझ सकती है। वह अपने बच्चों की शिक्षा, परिवार के स्वास्थ्य, आर्थिक बचत और सामाजिक निर्णयों में अधिक प्रभावी भूमिका निभा सकती है। साक्षरता उसे केवल जानकारी नहीं देती, बल्कि अपनी आवाज रखने का आत्मविश्वास भी देती है। इसलिए बालिकाओं और महिलाओं की शिक्षा में किया गया निवेश वास्तव में पूरे परिवार और आने वाली पीढ़ियों में किया गया निवेश है।

साक्षरता और डिजिटल युग—

आज साक्षरता की परिभाषा तेजी से बदल रही है। पहले पढ़ना-लिखना पर्याप्त माना जाता था, लेकिन आज व्यक्ति को डिजिटल दुनिया को समझना भी आवश्यक है। मोबाइल फोन, इंटरनेट, ऑनलाइन बैंकिंग, डिजिटल भुगतान, सोशल मीडिया और सरकारी ऑनलाइन सेवाएँ हमारे जीवन का हिस्सा बन चुके हैं। ऐसे समय में डिजिटल साक्षरता अत्यंत आवश्यक हो गई है। किसी लिंक पर क्लिक करने से पहले यह समझना कि वह सुरक्षित है या नहीं, किसी संदेश की सत्यता की जाँच करना, ऑनलाइन भुगतान करते समय सावधानी बरतना और अपनी निजी जानकारी को सुरक्षित रखना भी आधुनिक साक्षरता का हिस्सा है। डिजिटल तकनीक ने ज्ञान के दरवाजे खोल दिए हैं, लेकिन यदि व्यक्ति उसका

सुरक्षित व सही उपयोग करना नहीं जानता तो वही तकनीक जोखिम का कारण भी बन सकती है। इसलिए आज हमें ऐसी साक्षरता की आवश्यकता है, जो किताब और कंप्यूटर दोनों को समझे।

साक्षरता और दिव्यांगजन—

समावेशी समाज के निर्माण में साक्षरता की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। दिव्यांगजन के लिए शिक्षा और जानकारी तक समान पहुँच सुनिश्चित करना केवल सामाजिक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि समान अधिकार का प्रश्न है। ब्रेल लिपि, ऑडियो सामग्री, सांकेतिक भाषा, स्क्रीन रीडर, डिजिटल एक्सेसिबिलिटी और सहायक तकनीकों ने शिक्षा को अधिक सुलभ बनाने के रास्ते खोले हैं। आवश्यकता इस बात की है कि इन सुविधाओं को सीमित लोगों तक न रखकर व्यापक स्तर पर उपलब्ध कराया जाए। साक्षर समाज वही है, जिसमें कोई व्यक्ति अपनी शारीरिक क्षमता के कारण ज्ञान से वंचित न रह जाए। जब हम साक्षरता की बात करते हैं तो हमें यह भी सुनिश्चित करना होगा कि पुस्तकालय, विद्यालय, डिजिटल सामग्री और सार्वजनिक सूचनाएँ सभी के लिए सुलभ हों।

बुजुर्गों की साक्षरता: उम्र नहीं, उत्साह महत्वपूर्ण है—

अक्सर यह धारणा बना दी जाती है कि पढ़ाई केवल बच्चों और युवाओं के लिए होती है। यह सोच बदलने की जरूरत है। यदि कोई 50, 60 या 70 वर्ष का व्यक्ति पढ़ना-लिखना सीखना चाहता है, तो उसका स्वागत होना चाहिए। बुजुर्गों के लिए साक्षरता आत्मनिर्भरता का माध्यम बन सकती है। वे अपना नाम स्वयं लिख सकें, दवा के लेबल को समझ सकें, मोबाइल पर संदेश पढ़ सकें, बैंक या पेंशन से संबंधित जानकारी समझ सकें- ये छोटी दिखाई देने वाली क्षमताएँ उनके आत्मविश्वास को बहुत बढ़ा सकती हैं। हमें ऐसा वातावरण बनाना होगा जहाँ कोई भी व्यक्ति यह महसूस न करे कि सीखने के लिए अब बहुत देर हो चुकी है।

साक्षरता केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं—

साक्षरता का लक्ष्य केवल सरकारी योजनाओं से पूरा नहीं हो सकता। इसमें समाज के प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका है। शिक्षक, विद्यार्थी, सामाजिक संस्थाएँ, स्वयंसेवी संगठन, पुस्तकालय, स्थानीय प्रशासन, उद्योग और आम नागरिक- सभी मिलकर इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। एक व्यक्ति यदि अपने घर में काम करने वाले किसी व्यक्ति को पढ़ना सिखाता है, किसी बुजुर्ग को मोबाइल चलाना सिखाता है या किसी बच्चे को किताब उपलब्ध कराता है, तो वह भी साक्षरता अभियान का हिस्सा है। हम अपने आसपास से शुरुआत कर सकते हैं। सप्ताह में एक घंटा

किसी ऐसे व्यक्ति के साथ बिताया जा सकता है, जिसे पढ़ने-लिखने में कठिनाई होती है। किसी बच्चे को किताब दी जा सकती है। पुराने समाचारपत्र और पुस्तकें किसी जरूरतमंद तक पहुँचाई जा सकती हैं। स्थानीय स्तर पर छोटा-सा पुस्तकालय या अध्ययन केंद्र बनाया जा सकता है। बड़े बदलाव हमेशा बड़े प्रयासों से नहीं, छोटे-छोटे सतत प्रयासों से पैदा होते हैं।

साक्षरता से रोजगार और आर्थिक स्वतंत्रता—

आज रोजगार की दुनिया में भी साक्षरता का महत्व लगातार बढ़ रहा है। नौकरी के आवेदन से लेकर बैंक खाता खोलने, डिजिटल भुगतान करने, व्यवसाय चलाने और सरकारी योजनाओं का लाभ लेने तक- हर कदम पर पढ़ने और समझने की क्षमता आवश्यक है। बुनियादी साक्षरता के साथ यदि व्यक्ति को व्यावसायिक एवं वित्तीय शिक्षा भी मिले तो उसकी आर्थिक स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार हो सकता है। वह अपनी आय और खर्च का हिसाब रख सकता है, बचत की योजना बना सकता है और धोखाधड़ी से बचने के लिए आवश्यक जानकारी प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार साक्षरता गरीबी कम करने और आर्थिक आत्मनिर्भरता बढ़ाने का भी महत्वपूर्ण साधन है।

साक्षरता का अर्थ प्रश्न पूछने की क्षमता भी है—

सच्ची शिक्षा व्यक्ति को केवल उत्तर नहीं देती, बल्कि सही प्रश्न पूछना भी सिखाती है। साक्षर व्यक्ति किसी सूचना को आँख बंद करके स्वीकार करने के बजाय उसे समझने और उसकी सत्यता पर विचार करने की क्षमता विकसित करता है। आज जब सोशल मीडिया के माध्यम से सूचनाएँ बहुत तेजी से फैलती हैं, तब यह क्षमता और भी महत्वपूर्ण हो गई है। अफवाह, फर्जी खबर और भ्रामक जानकारी समाज को नुकसान पहुँचा सकती है। इसलिए आधुनिक साक्षरता का एक महत्वपूर्ण पक्ष सूचना को समझना, परखना और विवेकपूर्ण निर्णय लेना भी है।

हमारा संकल्प—

अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस केवल एक तारीख नहीं, बल्कि आत्ममंथन का अवसर है। हमें स्वयं से पूछना चाहिए-क्या हमारे आसपास कोई ऐसा व्यक्ति है जो पढ़ना-लिखना चाहता है लेकिन अवसर नहीं मिल पा रहा? क्या हमारे मोहल्ले के बच्चे के पास किताबें उपलब्ध हैं? क्या बुजुर्ग डिजिटल सेवाओं का सुरक्षित उपयोग कर पा रहे हैं? क्या दिव्यांगजन के लिए शिक्षा और जानकारी वास्तव में सुलभ है? यदि इन प्रश्नों के उत्तर में कहीं कमी दिखाई देती है तो वहीं से हमारा प्रयास शुरू होना चाहिए।

एक पुस्तक किसी व्यक्ति के हाथ में देना आसान काम है, लेकिन उस पुस्तक को पढ़ने की क्षमता देना उससे कहीं बड़ा काम है। किसी को अक्षर सिखाना केवल उसे शब्दों की दुनिया से परिचित कराना नहीं है; यह उसे अपने जीवन के फैसले स्वयं लेने का अवसर देना है।

निष्कर्ष—

साक्षरता वह प्रकाश है, जो व्यक्ति को अज्ञान के अंधकार से निकालकर संभावनाओं की दुनिया में ले जाता है। यह रोजगार देती है, आत्मविश्वास देती है, अधिकारों की समझ देती है और समाज में सम्मानपूर्वक भागीदारी का अवसर देती है। हमें साक्षरता को केवल

विद्यालय की चारदीवारी तक सीमित नहीं रखना चाहिए। इसे घर, गाँव, शहर, कार्यस्थल, डिजिटल दुनिया और समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचाना होगा। अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस पर हमारा संकल्प केवल इतना न हो कि हम इस दिन को याद रखें। हमारा संकल्प यह हो कि हम अपने आसपास कम-से-कम एक व्यक्ति को ज्ञान की दुनिया से जोड़ने का प्रयास करेंगे। क्योंकि- एक व्यक्ति का साक्षर होना केवल उसकी जिंदगी बदलता है, लेकिन एक समाज का साक्षर होना पूरी पीढ़ी का भविष्य बदल सकता है। और अंततः साक्षरता का सबसे सुंदर अर्थ यही है- अक्षरों को पढ़ना ही नहीं, बल्कि जीवन को समझना और उसे बेहतर बनाने की क्षमता हासिल करना।

भूतेश्वर महादेव मन्दिर प्राणप्रतिष्ठा कार्यक्रम

नवधृति मानवाधिकार फाउण्डेशन का सहयोग



हिंदी दिवस- 14 सितंबर

हिंदी हमारी भाषा, हमारी पहचान और हमारी जिम्मेदारी

भाषा केवल विचारों को व्यक्त करने का माध्यम नहीं होती, वह हमारी संस्कृति, परंपरा, भावनाओं और पहचान को अपने भीतर समेटे रहती है। जब हम अपनी मातृभाषा या अपनी परिचित भाषा में किसी से बात करते हैं, तो शब्दों के साथ भावनाएँ भी सहज रूप से व्यक्त होती हैं। हिंदी भी करोड़ों भारतीयों के लिए केवल संवाद की भाषा नहीं, बल्कि उनकी स्मृतियों, रिश्तों, संस्कारों और जीवनशैली का अभिन्न हिस्सा है। हर वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। यह दिन हमें हिंदी के महत्व को याद करने के साथ-साथ यह विचार करने का अवसर भी देता है कि बदलते समय में हम अपनी भाषा के साथ कैसा व्यवहार कर रहे हैं। क्या हिंदी केवल एक विषय बनकर विद्यालयों की किताबों में रह गई है? क्या हिंदी का उपयोग केवल घर और सामाजिक बातचीत तक सीमित है? या फिर आधुनिक तकनीक, इंटरनेट, व्यवसाय और रोजगार की दुनिया में भी हिंदी अपने लिए एक मजबूत स्थान बना रही है? इन प्रश्नों पर विचार करना आज पहले से कहीं अधिक आवश्यक है।

14 सितंबर का महत्व—

भारत की संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। इसी ऐतिहासिक अवसर की स्मृति में प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। यहाँ एक बात समझना आवश्यक है कि हिंदी को लेकर चर्चा केवल भाषा के गौरव तक सीमित नहीं होनी चाहिए। किसी भाषा का वास्तविक सम्मान तब होता है जब उसका प्रयोग जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सहजता, गुणवत्ता और आत्मविश्वास के साथ किया जाए। हिंदी दिवस हमें यही अवसर देता है कि हम हिंदी के प्रति अपने दृष्टिकोण का मूल्यांकन करें और उसे केवल समारोहों और भाषणों तक सीमित न रखकर व्यवहार में उतारें।

हिंदी और भारतीय संस्कृति—

भारत विविधताओं का देश है। यहाँ अनेक भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। प्रत्येक भाषा अपने साथ एक विशिष्ट

संस्कृति और इतिहास लेकर चलती है। हिंदी ने इन विविधताओं के बीच संवाद स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी साहित्य में भारत के सामाजिक जीवन, ग्रामीण संस्कृति, लोक परंपराओं, संघर्षों, प्रेम, करुणा और मानवीय संवेदनाओं की समृद्ध अभिव्यक्ति दिखाई देती है। कबीर, तुलसीदास, सूरदास, प्रेमचंद, महादेवी वर्मा, रामधारी सिंह दिनकर, हरिवंश राय बच्चन और अनेक साहित्यकारों ने हिंदी को समृद्ध किया। हिंदी की शक्ति केवल उसके शब्दों में नहीं, बल्कि उसकी अभिव्यक्ति की विविधता में है। इसमें लोकगीतों की सरलता भी है और दर्शन की गहराई भीय प्रेम की कोमलता भी है और सामाजिक संघर्ष की तीव्रता भी।

हिंदी और हमारी पहचान—

आज के वैश्विक युग में अंग्रेजी सहित अनेक भाषाओं का ज्ञान होना निश्चित रूप से उपयोगी है। दुनिया से जुड़ने, उच्च शिक्षा प्राप्त करने और रोजगार के अनेक अवसरों में अंग्रेजी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लेकिन किसी दूसरी भाषा का ज्ञान हमारी अपनी भाषा के महत्व को कम नहीं करता। दूसरी भाषा सीखना प्रगति है, लेकिन अपनी भाषा को भूल जाना प्रगति नहीं है। हमारे घरों में बच्चों से बातचीत, परिवार की कहानियाँ, लोकगीत, कहावतें और जीवन के अनुभव भाषा के माध्यम से ही अगली पीढ़ी तक पहुँचते हैं। यदि भाषा कमजोर होती है तो धीरे-धीरे उससे जुड़ी सांस्कृतिक स्मृतियाँ भी कमजोर पड़ने लगती हैं। इसलिए हिंदी को अपनाना किसी अन्य भाषा का विरोध करना नहीं, बल्कि अपनी भाषाई विरासत का सम्मान करना है।

डिजिटल युग में हिंदी—

एक समय था जब इंटरनेट की दुनिया में अंग्रेजी का लगभग एकाधिकार दिखाई देता था। आज परिस्थितियाँ तेजी से बदल रही हैं। मोबाइल फोन, सोशल मीडिया, वीडियो प्लेटफॉर्म, ब्लॉग, डिजिटल समाचार, ऑनलाइन शिक्षा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे क्षेत्रों में हिंदी की उपस्थिति लगातार बढ़ रही है।

आज कोई व्यक्ति अपने मोबाइल पर हिंदी में समाचार पढ़ सकता है, हिंदी में वीडियो बना सकता है, हिंदी में व्यवसाय का प्रचार कर सकता है और दुनिया के किसी भी कोने में बैठे व्यक्ति तक अपनी बात पहुँचा सकता है। यूनिकोड और भारतीय भाषाओं के डिजिटल समर्थन ने हिंदी के उपयोग को और आसान बनाया है। स्मार्टफोन पर हिंदी टाइप करना, आवाज से हिंदी लिखना और हिंदी में डिजिटल सामग्री तैयार करना पहले की तुलना में काफी सरल हो गया है। इस परिवर्तन ने हिंदी के लिए नई संभावनाओं के दरवाजे खोले हैं।

सोशल मीडिया और हिंदी—

सोशल मीडिया ने हिंदी को एक नया मंच दिया है। आज लाखों लोग फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब और अन्य डिजिटल माध्यमों पर हिंदी में अपनी बात रखते हैं। छोटे शहरों और गाँवों से आने वाले लोग भी अपनी स्थानीय भाषा और हिंदी के माध्यम से बड़ी संख्या में लोगों तक पहुँच रहे हैं। यह लोकतांत्रिक परिवर्तन महत्वपूर्ण है। अब अभिव्यक्ति केवल बड़े संस्थानों या प्रकाशकों तक सीमित नहीं रही। एक सामान्य व्यक्ति भी अपने विचार, अनुभव, कविता, कहानी या व्यवसाय को हिंदी में दुनिया के सामने रख सकता है। हालाँकि इसके साथ हमारी जिम्मेदारी भी बढ़ती है। सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रयोग करते समय भाषा की गरिमा बनाए रखना, गलत सूचना से बचना और शब्दों का जिम्मेदारी से इस्तेमाल करना आवश्यक है।

हिंदी और रोजगार—

एक आम धारणा है कि रोजगार और सफलता के लिए केवल अंग्रेजी आवश्यक है। यह धारणा पूरी तरह सही नहीं है। आज हिंदी में भी पत्रकारिता, लेखन, अनुवाद, डिजिटल कंटेंट, विज्ञापन, रेडियो, टेलीविजन, फिल्म, शिक्षा, पर्यटन, ग्राहक सेवा और अनेक क्षेत्रों में अवसर उपलब्ध हैं। इंटरनेट के विस्तार के साथ हिंदी कंटेंट की मांग भी बढ़ी है। कंपनियों को ऐसे लोगों की आवश्यकता होती है जो ग्राहकों तक उनकी अपनी भाषा में प्रभावी ढंग से पहुँच सकें। भविष्य में भाषाई तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और स्थानीय डिजिटल सेवाओं के विस्तार के साथ भारतीय भाषाओं में नए अवसर पैदा होने की संभावना है। इसलिए आवश्यकता हिंदी को केवल भावनात्मक विषय मानने

की नहीं, बल्कि उसे कौशल और रोजगार की भाषा के रूप में विकसित करने की भी है।

शिक्षा में हिंदी की भूमिका—

बच्चा जिस भाषा में सोचता और भावनाओं को समझता है, उस भाषा में जटिल विषयों को समझना उसके लिए अक्सर अधिक सहज होता है। इसलिए शिक्षा में भारतीय भाषाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है। हिंदी माध्यम से पढ़ने वाले विद्यार्थियों को उच्च गुणवत्ता की पाठ्य सामग्री, विज्ञान, तकनीक, चिकित्सा, कानून और अन्य आधुनिक विषयों की सामग्री हिंदी में उपलब्ध कराना आवश्यक है। यदि आधुनिक ज्ञान केवल सीमित भाषाओं में उपलब्ध रहेगा तो भाषा के आधार पर ज्ञान तक पहुँच में अंतर बना रहेगा। हिंदी को मजबूत बनाने का अर्थ यह नहीं कि विज्ञान और तकनीक को केवल विदेशी शब्दों से अलग कर दिया जाए। बल्कि आवश्यकता यह है कि आधुनिक ज्ञान को सरल ए सटीक और समझने योग्य हिंदी में उपलब्ध कराया जाए।

हिंदी की सबसे बड़ी चुनौती: दिखावा—

हिंदी दिवस के अवसर पर हम हिंदी के सम्मान की बात करते हैं, समारोह आयोजित करते हैं, भाषण देते हैं और प्रतियोगिताएँ करवाते हैं। लेकिन वर्ष के बाकी दिनों में यदि हम हिंदी का उपयोग करने में संकोच करें, तो यह सम्मान अधूरा रह जाता है। भाषा को बचाने के लिए केवल दिवस मनाना पर्याप्त नहीं है। भाषा का वास्तविक विकास उसके निरंतर प्रयोग से होता है। हमें कार्यालयों में, व्यापार में, डिजिटल माध्यमों में, शिक्षा में और सार्वजनिक जीवन में हिंदी का प्रयोग बढ़ाना होगा। जहाँ आवश्यक हो वहाँ अंग्रेजी या अन्य भाषाओं का उपयोग भी सहजता से किया जाना चाहिए। भाषा को लेकर हीनभावना या श्रेष्ठता की भावना- दोनों से बचना जरूरी है।

हिंदी और दूसरी भारतीय भाषाएँ—

हिंदी की बात करते समय हमें भारत की अन्य भाषाओं के सम्मान को भी उतना ही महत्व देना चाहिए। तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, मराठी, गुजराती, बंगाली, पंजाबी, असमिया, उड़िया, संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाएँ हमारी साझा भाषाई विरासत हैं। भारत की भाषाई विविधता हमारी कमजोरी नहीं, हमारी ताकत है।

हिंदी को आगे बढ़ाने का सबसे सुंदर तरीका यह होगा कि वह अन्य भारतीय भाषाओं के साथ सहयोग और संवाद का माध्यम बने। अनुवाद के माध्यम से हम एक भाषा के साहित्य और ज्ञान को दूसरी भाषा के पाठकों तक पहुँचा सकते हैं।

सरल हिंदी की आवश्यकता—

कभी-कभी हम हिंदी को प्रभावशाली बनाने के लिए कठिन और अत्यधिक संस्कृतनिष्ठ शब्दों का प्रयोग करने लगते हैं। इससे भाषा आम पाठक से दूर हो सकती है। हिंदी की सुंदरता उसकी सहजता में है। ऐसी हिंदी, जिसे सामान्य व्यक्ति पढ़कर समझ सके और बिना झिझक बोल सके अधिक प्रभावी है। पत्रकारिता, सरकारी संचार, विज्ञापन, शिक्षा और डिजिटल मीडिया में सरल ए स्पष्ट और प्रभावी हिंदी का प्रयोग बढ़ना चाहिए। भाषा जितनी सहज होगी, उतने अधिक लोग उससे जुड़ेंगे।

हमारी जिम्मेदारी—

हिंदी को मजबूत बनाने के लिए सरकार या संस्थाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है, लेकिन समाज और प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका भी कम नहीं है। हम अपने स्तर पर कई छोटे प्रयास कर सकते हैं- घर में बच्चों से हिंदी में बातचीत करें। हिंदी की अच्छी किताबें पढ़ें और दूसरों को पढ़ने के लिए प्रेरित करें। हिंदी में गुणवत्तापूर्ण डिजिटल सामग्री तैयार करें। हिंदी लेखकों और प्रकाशकों को प्रोत्साहित करें। दूसरी भाषाएँ सीखें, लेकिन अपनी भाषा के प्रति संकोच न रखें। हिंदी में विज्ञान, तकनीक और आधुनिक विषयों की सामग्री को बढ़ावा दें। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद को प्रोत्साहित करें। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हिंदी को केवल भावना की भाषा नहीं, ज्ञान और अवसर की भाषा भी बनाया जाए।

युवा और हिंदी का भविष्य—

किसी भी भाषा का भविष्य उसकी युवा पीढ़ी तय करती है। आज के युवा जिस भाषा में संवाद करते हैं, उसी भाषा का आने वाला स्वरूप बनता है। युवाओं के हाथ में स्मार्टफोन है, उनके पास सोशल मीडिया है, वीडियो निर्माण के साधन हैं और दुनिया तक पहुँचने का अवसर है। यदि वे हिंदी में गुणवत्तापूर्ण सामग्री बनाएँ तो हिंदी का डिजिटल भविष्य और मजबूत होगा। युवा पीढ़ी हिंदी में कविता लिख सकती है, ब्लॉग बना सकती है,

पॉडकास्ट कर सकती है, व्यवसाय चला सकती है, शैक्षणिक सामग्री तैयार कर सकती है और तकनीकी विषयों को सरल भाषा में लोगों तक पहुँचा सकती है। यही हिंदी के भविष्य की वास्तविक दिशा है।

निष्कर्ष—

हिंदी दिवस केवल हिंदी को याद करने का दिन नहीं है। यह अपने आप से एक प्रश्न पूछने का दिन है- क्या हम अपनी भाषा का उपयोग उतने ही आत्मविश्वास से करते हैं, जितना अपनी पहचान पर गर्व करते हैं- हिंदी का भविष्य केवल सरकारी कार्यालयों, विद्यालयों और साहित्यिक मंचों में तय नहीं होगा। उसका भविष्य हमारे घरों, मोबाइल फोन, सोशल मीडिया, बाजार, शिक्षा, व्यवसाय और नई तकनीक में तय होगा। हिंदी को बचाने की आवश्यकता नहीं है; आवश्यकता है उसे समय के साथ आगे बढ़ाने की। उसे आधुनिक ज्ञान से जोड़ने की, तकनीक से जोड़ने की, रोजगार से जोड़ने की और नई पीढ़ी की आकांक्षाओं से जोड़ने की। हमें ऐसी हिंदी चाहिए जो अपनी जड़ों से जुड़ी हो, लेकिन भविष्य की ओर देखने से न डरे। क्योंकि भाषा तभी जीवित रहती है, जब वह समय के साथ चलती है। हिंदी हमारी पहचान है, लेकिन केवल पहचान बनकर रह जाना पर्याप्त नहीं। हिंदी हमारी जिम्मेदारी भी है- और इस जिम्मेदारी को निभाने का सबसे अच्छा तरीका है हिंदी को अपने जीवन में सहजता, सम्मान और आत्मविश्वास के साथ स्थान देना।

‘हिंदी का सम्मान केवल हिंदी दिवस पर नहीं, हर उस दिन हो जब हम अपनी बात अपनी भाषा में पूरे आत्मविश्वास से कहें।’



लोकतंत्र: जनता की सरकार या जनता का इंतज़ार? 'लोकतंत्र में जनता सर्वोपरि है।'

यह वाक्य हम बचपन से सुनते आए हैं। चुनाव के दिनों में तो इसकी आवृत्ति इतनी बढ़ जाती है कि लगता है जैसे देश में जनता से अधिक महत्वपूर्ण कोई व्यक्ति है ही नहीं। नेता जी जनता के दरवाजे पर दिखाई देते हैं, हाथ जोड़ते हैं, पैर छूते हैं, चाय पीते हैं, गले मिलते हैं और कभी-कभी तो जनता के घर का खाना भी खा लेते हैं। फिर चुनाव समाप्त होते हैं। और जनता सोचती रह जाती है- 'अब हमारी बारी कब आएगी?'

हर वर्ष 15 सितंबर को अंतरराष्ट्रीय लोकतंत्र दिवस मनाया जाता है। लोकतंत्र के मूल्यों, नागरिकों की भागीदारी, स्वतंत्रता और अधिकारों की चर्चा होती है। सभाएँ होती हैं, भाषण होते हैं, लोकतंत्र की खूबियाँ गिनाई जाती हैं। लेकिन लोकतंत्र का असली परीक्षण मंच पर नहीं, बल्कि उस समय होता है जब कोई सामान्य नागरिक किसी कार्यालय में अपने अधिकार के लिए खड़ा होता है और सामने से आवाज आती है- 'साहब अभी मीटिंग में हैं।' लोकतंत्र का यही तो कमाल है- सत्ता जनता की, सरकार जनता की, अधिकारी जनता के सेवक, लेकिन जनता को मिलने के लिए सबके पास समय कम है!

चुनाव: लोकतंत्र का त्योहार—

हमारे यहाँ चुनाव किसी त्योहार से कम नहीं होते। चुनाव आते ही नेता जी को अचानक जनता की याद आने लगती है। जो व्यक्ति पाँच साल तक फोन पर उपलब्ध नहीं थे, वे चुनाव के समय खुद फोन करने लगते हैं।

'भाई साहब, कैसे हैं?, बहुत दिन हो गए मिलना नहीं हुआ, घर पर सब ठीक है?' और मतदाता मन ही मन सोचता है- 'जी, पाँच साल से ठीक ही हैं। अब अचानक हमारी तबीयत की चिंता क्यों?'

चुनाव लोकतंत्र का सबसे महत्वपूर्ण उत्सव है। जनता अपने प्रतिनिधि चुनती है। लेकिन समस्या तब शुरू होती है जब चुनाव विचारों की प्रतियोगिता के बजाय भावनाओं, जातियों, धर्मों और मुफ्त वादों की प्रतियोगिता बन जाता है।

कौन बेहतर शिक्षा देगा? कौन स्वास्थ्य व्यवस्था सुधारेगा? कौन रोजगार पैदा करेगा? कौन भ्रष्टाचार कम करेगा? इन सवालियों की जगह कभी-कभी चर्चा होने लगती है- किसने किसे क्या कहा? किसने किसका पोस्टर फाड़ा? किसने किसके साथ फोटो खिंचवाई? लोकतंत्र में मुद्दे भी बेचारे हैं। वे चुनावी मौसम में कुछ दिनों के लिए बाहर निकलते हैं और परिणाम आते ही निरुत्तर अगले चुनाव तक भूमिगत हो जाते हैं। जनता मालिक है- लेकिन मालिक की हालत देखिए, कहा जाता है कि लोकतंत्र में जनता मालिक होती है। लेकिन हमारे 'मालिक' को अपने ही काम के लिए आवेदन देना पड़ता है, लाइन में लगना पड़ता है, कई बार चक्कर काटने पड़ते हैं और अंत में किसी परिचित की तलाश करनी पड़ती है। पासपोर्ट हो, प्रमाण-पत्र हो, पेंशन हो, सड़क की शिकायत हो या किसी सरकारी योजना का लाभ-कागजों की दुनिया में नागरिक कभी-कभी इतना घूमता है कि उसे लगता है कि वह नागरिक कम और फाइल नंबर ज्यादा है।

व्यंग्य यह है कि व्यवस्था कहती है- 'सब कुछ ऑनलाइन है।' नागरिक पूछता है- 'तो फिर ऑफलाइन में इतनी परेशानी क्यों है?' जवाब आता है- 'सिस्टम में थोड़ी समस्या है।' सिस्टम! यह ऐसा अद्भुत प्राणी है, जिसकी गलती के लिए कभी कोई जिम्मेदार व्यक्ति नहीं मिलता।

लोकतंत्र और भ्रष्टाचार—

लोकतंत्र की सबसे बड़ी चुनौतियों में भ्रष्टाचार भी शामिल है। रिश्तत को हमने कभी-कभी इतनी सहजता से स्वीकार कर लिया है कि वह भ्रष्टाचार कम और 'काम करवाने की फीस' ज्यादा लगने लगती है। व्यक्ति कहता है- 'काम जल्दी करवाना है।' दूसरा पूछता है- 'नियम से या...?' बस, यहीं से लोकतंत्र की परीक्षा शुरू हो जाती है। भ्रष्टाचार केवल पैसे का लेन-देन नहीं है। जब किसी योग्य व्यक्ति का अधिकार किसी प्रभावशाली व्यक्ति के कारण छिन जाता है तब भी लोकतंत्र कमजोर होता है। जब नियम सबके लिए बराबर न हों, तब संविधान की किताब कितनी भी सुंदर क्यों न हो, नागरिक का भरोसा टूटने लगता है।

वोट की कीमत और वादों की कीमत—

चुनाव से पहले घोषणाएँ होती हैं। हर वर्ग के लिए योजनाएँ आती हैं। युवा, किसान, महिला, व्यापारी, कर्मचारी, बुजुर्ग- हर किसी के लिए कुछ न कुछ। घोषणा-पत्र पढ़कर लगता है कि देश में अब कोई समस्या बची ही नहीं। लेकिन चुनाव के बाद नागरिक जब पूछता है- 'वह वादा कब पूरा होगा?', तो उत्तर आता है- 'प्रक्रिया चल रही है।' प्रक्रिया लोकतंत्र का एक ऐसा शब्द है, जो हर प्रश्न का उत्तर बन सकता है। सड़क नहीं बनी?- प्रक्रिया चल रही है। नौकरी नहीं मिली?- प्रक्रिया चल रही है। पानी की समस्या है?- प्रक्रिया चल रही है। और पाँच साल बाद- फिर से चुनाव की प्रक्रिया शुरू हो जाती है!

लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका—

लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहे जाने वाले मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। लोकतंत्र में स्वतंत्र और जिम्मेदार पत्रकारिता जनता और सत्ता के बीच एक आवश्यक पुल है। लेकिन आज मीडिया के सामने भी कई चुनौतियाँ हैं। टीआरपी की दौड़, विज्ञापन का दबाव, राजनीतिक प्रभाव और सोशल मीडिया की सनसनी ने खबर और मनोरंजन के बीच की रेखा को कई बार धुंधला कर दिया है। कभी-कभी खबर इतनी तेज होती है कि तथ्य पीछे छूट जाते हैं।

सुबह खबर आती है- बड़ी खबर!, दोपहर तक- सबसे बड़ी खबर!, शाम तक- इतिहास की सबसे बड़ी खबर! और अगले दिन पता चलता है कि खबर उतनी बड़ी थी ही नहीं। लोकतंत्र को शोर नहीं, सत्य और तथ्य चाहिए।

सोशल मीडिया: हर नागरिक पत्रकार—

सोशल मीडिया ने लोकतंत्र को एक नया हथियार दिया है- हर व्यक्ति अपनी बात कह सकता है। यह सकारात्मक परिवर्तन है। लेकिन समस्या तब आती है जब हर व्यक्ति पत्रकार भी बन जाता है, संपादक भी, न्यायाधीश भी और विशेषज्ञ भी। किसी ने संदेश भेजा- यह खबर 100 प्रतिशत सही है। तुरंत शेयर करें। और हम सोचते हैं- जब 100 प्रतिशत लिखा है तो जरूर सही होगी! फिर वही खबर दस हजार लोगों तक पहुँचती है और बाद में पता चलता है कि वह झूठी थी। लोकतंत्र में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता महत्वपूर्ण है, लेकिन उसके साथ जिम्मेदारी की स्वतंत्रता भी होनी चाहिए। बोलने का अधिकार है, लेकिन झूठ

फैलाने का अधिकार नहीं।

बहुमत और लोकतंत्र—

लोकतंत्र का अर्थ केवल बहुमत का शासन नहीं है। लोकतंत्र की असली सुंदरता इस बात में है कि बहुमत के साथ अल्पमत की आवाज भी सुनी जाए। यदि किसी निर्णय से 90 प्रतिशत लोग खुश हैं और 10 प्रतिशत लोगों की गंभीर समस्या है, तो लोकतांत्रिक व्यवस्था का दायित्व है कि उन 10 प्रतिशत लोगों की बात भी सुनी जाए। क्योंकि लोकतंत्र में नागरिक की कीमत उसकी संख्या से तय नहीं होनी चाहिए। एक व्यक्ति भी नागरिक है। उसकी आवाज भी आवाज है। उसका अधिकार भी अधिकार है।

विपक्ष: दुश्मन नहीं, लोकतंत्र का आईना—

लोकतंत्र में मजबूत विपक्ष आवश्यक है। विपक्ष का काम हर बात का विरोध करना नहीं, बल्कि सरकार से सवाल पूछना है। लेकिन हमारी राजनीति में कई बार ऐसा लगता है कि सत्ता पक्ष के लिए विपक्ष देश की प्रगति में बाधा है और विपक्ष के लिए सत्ता पक्ष देश की हर समस्या का कारण। सच शायद इन दोनों के बीच कहीं बैठा हुआ है। विपक्ष सरकार से सवाल पूछे- यह लोकतंत्र है। सरकार विपक्ष के सवालों का जवाब दे- यह भी लोकतंत्र है। लेकिन यदि सवाल पूछने वाले को ही देशद्रोही, विकास विरोधी या दुश्मन घोषित कर दिया जाए, तो लोकतंत्र की सेहत पर सवाल उठना स्वाभाविक है।

लोकतंत्र और आम आदमी की चुप्पी—

लोकतंत्र की सबसे बड़ी समस्या केवल नेताओं की नहीं है। नागरिकों की उदासीनता भी एक बड़ी चुनौती है। हम चुनाव के दिन मतदान करने को लोकतंत्र का पूरा कर्तव्य मान लेते हैं। वोट दिया, उंगली पर स्याही लगाई। फोटो खिंचवाई। और फिर पाँच साल के लिए लोकतंत्र को छुट्टी दे दी। लेकिन लोकतंत्र पाँच साल में एक दिन का कार्यक्रम नहीं है।

सवाल पूछना, जानकारी लेना, स्थानीय समस्याओं पर आवाज उठाना, गलत सूचना से बचना, करों का भुगतान करना, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना और दूसरे नागरिक के अधिकारों का सम्मान करना भी लोकतंत्र का हिस्सा है। लोकतंत्र केवल वोट डालने से मजबूत नहीं होता, वोट देने के बाद जागते रहने से मजबूत होता है।

हम कैसी राजनीति चाहते हैं—

शायद हमें ऐसी राजनीति चाहिए जिसमें नेता जनता को केवल वोट न समझे और जनता नेता को केवल चुनाव के समय याद न करे। हमें ऐसी राजनीति चाहिए जहाँ चुनाव में व्यक्तिगत आरोपों से ज्यादा नीतियों पर चर्चा हो। जहाँ शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, पर्यावरण, सुरक्षा, स्थानीय विकास और सामाजिक न्याय चुनावी बहस के केंद्र में हों। जहाँ घोषणा-पत्र केवल छपने के लिए न हो, बल्कि उसकी प्रगति का सार्वजनिक हिसाब भी दिया जाए। और सबसे महत्वपूर्ण- जहाँ नागरिक को यह महसूस हो कि सरकार उससे ऊपर नहीं, उसके प्रति जवाबदेह है।

लोकतंत्र का असली अर्थ—

लोकतंत्र का अर्थ केवल यह नहीं कि हम अपनी सरकार चुन सकें। इसका अर्थ यह भी है कि हम सवाल पूछ सकें, असहमति व्यक्त कर सकें, अपने अधिकारों की रक्षा कर सकें और बिना भय के अपनी बात रख सकें। लोकतंत्र तब मजबूत होता है जब सत्ता से सवाल पूछना सामान्य बात हो और सवाल

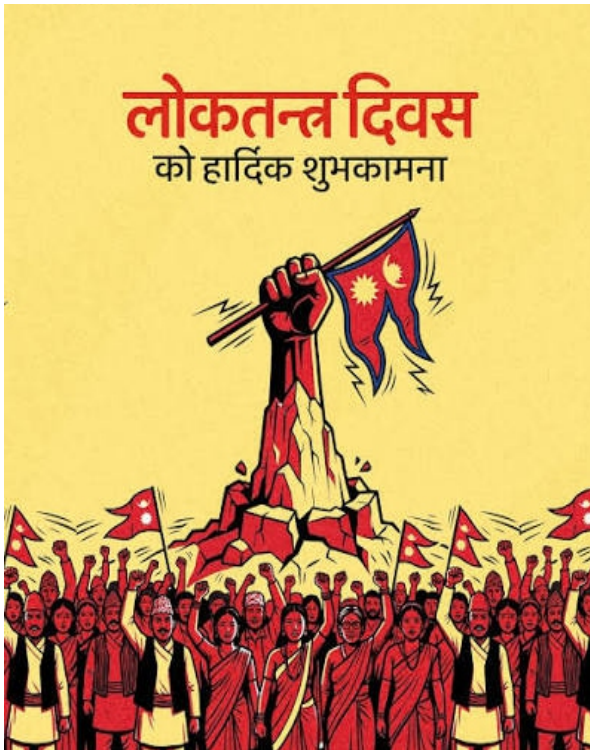
पूछने वाले को दुश्मन न समझा जाए। लोकतंत्र तब मजबूत होता है जब कानून व्यक्ति देखकर नहीं, सिद्धांत देखकर लागू हो। लोकतंत्र तब मजबूत होता है जब गरीब और अमीर, गाँव और शहर, महिला और पुरुष, सक्षम और दिव्यांग- हर नागरिक को समान सम्मान और अवसर मिले। और लोकतंत्र तब सबसे मजबूत होता है जब जनता कह सके- हमने आपको चुना है, इसलिए आपसे सवाल भी पूछेंगे।

अंतिम बात, लोकतंत्र को केवल मनाएँ नहीं, निभाएँ—

अंतरराष्ट्रीय लोकतंत्र दिवस पर भाषण देना आसान है। लोकतंत्र की जय बोलना भी आसान है। मुश्किल है लोकतांत्रिक मूल्यों को अपने व्यवहार में उतारना। हम अक्सर नेताओं से ईमानदारी की अपेक्षा करते हैं, लेकिन क्या हम स्वयं ईमानदार नागरिक हैं? हम नेताओं से कानून का पालन करने की उम्मीद करते हैं, लेकिन क्या हम स्वयं नियमों का पालन करते हैं? हम चाहते हैं कि हमारी आवाज सुनी जाए, लेकिन क्या हम दूसरे की आवाज सुनने के लिए तैयार हैं? लोकतंत्र की असली शुरुआत संसद से नहीं, हमारे घर से होती है। बच्चे की बात सुनना भी लोकतंत्र है। परिवार में सबकी राय लेना भी लोकतंत्र है। दूसरे की असहमति का सम्मान करना भी लोकतंत्र है। गलत बात का विरोध करना भी लोकतंत्र है। और शायद सबसे बड़ा लोकतंत्र यह है कि हम यह स्वीकार कर सकें कि हम हमेशा सही नहीं होते। इसलिए अंतरराष्ट्रीय लोकतंत्र दिवस पर हमें केवल यह नहीं पूछना चाहिए कि हमारा लोकतंत्र कैसा है।

हमें यह भी पूछना चाहिए—

लोकतंत्र को बेहतर बनाने में मेरा योगदान क्या है?, क्योंकि लोकतंत्र कोई तैयार वस्तु नहीं है, जिसे चुनाव के बाद पाँच साल के लिए अलमारी में रख दिया जाए। यह रोज जीने वाली व्यवस्था है। और अगर हम सचमुच चाहते हैं कि लोकतंत्र जनता का हो, तो जनता को भी केवल मतदाता नहीं, बल्कि जागरूक, जिम्मेदार और सक्रिय नागरिक बनना होगा। वरना कहीं ऐसा न हो कि संविधान की किताब में लिखा रहे- 'जनता सर्वोपरि है।' और जनता बाहर खड़ी पूछती रहे- 'साहब, हमसे मिलने का नंबर कब आएगा?'



यात्राओं से संवाद, संस्कृतियों से संबंध और विकास की नई राह



राष्ट्रीय पर्यटन दिवस

हर यात्रा केवल एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचना नहीं होती। यात्रा मनुष्य को अपने भीतर झाँकने, नए लोगों से मिलने, अलग-अलग संस्कृतियों को समझने और दुनिया को नए दृष्टिकोण से देखने का अवसर देती है। पर्यटन इसी मानवीय जिज्ञासा का विस्तृत रूप है। यह प्रकृति, इतिहास, संस्कृति, कला, खान-पान और परंपराओं से परिचय कराने के साथ-साथ देशों और समाजों के बीच संवाद का सेतु भी बनता है। इसी महत्त्व को रेखांकित करने के लिए प्रतिवर्ष 27 सितंबर को विश्व पर्यटन दिवस मनाया जाता है।

पर्यटन : मनोरंजन से कहीं अधिक —

आमतौर पर पर्यटन को छुट्टियाँ बिताने, घूमने-फिरने और मनोरंजन से जोड़कर देखा जाता है, लेकिन इसका दायरा इससे कहीं बड़ा है। पर्यटन लाखों लोगों के लिए रोजगार का माध्यम है। होटल, रेस्तरां, परिवहन, हस्तशिल्प, स्थानीय बाजार, गाइड, फोटोग्राफी, लोककलाएँ और अनेक छोटे व्यवसाय प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पर्यटन पर निर्भर रहते हैं। किसी छोटे शहर या गाँव में पर्यटकों का आगमन स्थानीय अर्थव्यवस्था को गति दे सकता है। एक पर्यटक होटल में ठहरता है, स्थानीय भोजन करता है, टैक्सी या बस से यात्रा करता है, स्मृति-चिह्न खरीदता है और स्थानीय कलाकारों की प्रस्तुतियाँ देखता है। इस प्रकार उसके खर्च का लाभ समाज के अनेक वर्गों तक पहुँचता है।

विश्व पर्यटन दिवस का उद्देश्य —

विश्व पर्यटन दिवस की स्थापना पर्यटन के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक महत्त्व के प्रति वैश्विक

जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से की गई। यह दिन हमें याद दिलाता है कि पर्यटन केवल आर्थिक गतिविधि नहीं, बल्कि लोगों और संस्कृतियों को जोड़ने वाली शक्ति भी है। पर्यटन हमें यह समझने में सहायता करता है कि दुनिया में विविधता कितनी व्यापक है। भाषा अलग हो सकती है, पहनावा अलग हो सकता है, भोजन अलग हो सकता है और पूजा-पद्धतियाँ अलग हो सकती हैं, लेकिन मनुष्य की मूल भावनाएँ— प्रेम, सम्मान, परिवार, मित्रता और शांति— लगभग हर जगह समान दिखाई देती हैं।

भारत: पर्यटन की अपार संभावनाओं वाला देश —

भारत पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध देश है। यहाँ हिमालय की बर्फीली चोटियों से लेकर समुद्र के विस्तृत तटों तक, रेगिस्तान से लेकर घने जंगलों तक और प्राचीन मंदिरों से लेकर आधुनिक महानगरों तक सब कुछ मौजूद है। राजस्थान अपने किलों, हवेलियों, लोकसंगीत और रेगिस्तानी संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है। केरल के बैकवाटर, गोवा के समुद्र तट, कश्मीर की वादियाँ, उत्तर-पूर्व की प्राकृतिक सुंदरता, वाराणसी की आध्यात्मिक परंपरा और दक्षिण भारत के भव्य मंदिर भारत की विविधता को प्रदर्शित करते हैं। राजस्थान में जैसलमेर, जोधपुर, जयपुर, उदयपुर, पुष्कर और बीकानेर जैसे शहर देश-विदेश के पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

इसी तरह छोटे और कम प्रसिद्ध शहरों में भी पर्यटन की बड़ी संभावनाएँ हैं। यदि स्थानीय ऐतिहासिक स्थलों, लोककलाओं और प्राकृतिक क्षेत्रों को उचित प्रचार और सुविधाएँ मिलें तो ग्रामीण और कस्बाई अर्थव्यवस्था को भी मजबूत किया जा सकता है।

पर्यटन और स्थानीय संस्कृति—

पर्यटन का सबसे सुंदर पक्ष यह है कि यह स्थानीय संस्कृति को दुनिया तक पहुँचाता है। किसी क्षेत्र का लोकनृत्य, लोकगीत, पारंपरिक वेशभूषा, हस्तशिल्प और स्थानीय व्यंजन पर्यटकों के माध्यम से दूर-दूर तक पहुँचते हैं। लेकिन यहाँ सावधानी भी आवश्यक है। संस्कृति को केवल पर्यटकों के मनोरंजन की वस्तु बना देना उचित नहीं है। स्थानीय परंपराओं का सम्मान करते हुए उनका संरक्षण और संवर्धन होना चाहिए। पर्यटन ऐसा हो जिसमें स्थानीय समुदाय केवल दर्शक नहीं, बल्कि सक्रिय भागीदार बने।

जिम्मेदार पर्यटन की आवश्यकता—

आज पर्यटन के सामने सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक पर्यावरण संरक्षण है। अत्यधिक पर्यटक किसी प्राकृतिक स्थल पर पहुँचते हैं तो वहाँ कचरा, जल की कमी, यातायात और प्रदूषण जैसी समस्याएँ पैदा हो सकती हैं। पहाड़ी क्षेत्रों में अनियंत्रित निर्माण और समुद्री तटों पर बढ़ता प्रदूषण प्रकृति के लिए गंभीर खतरा है। इसलिए अब दुनिया में सतत और जिम्मेदार पर्यटन की अवधारणा पर जोर दिया जा रहा है। इसका अर्थ है- ऐसा पर्यटन जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करे, लेकिन आने वाली पीढ़ियों के प्राकृतिक और सांस्कृतिक संसाधनों को नुकसान न पहुँचाए। एक जिम्मेदार पर्यटक प्लास्टिक का अनावश्यक उपयोग नहीं करता, ऐतिहासिक स्मारकों को नुकसान नहीं पहुँचाता, स्थानीय नियमों का पालन करता है और स्थानीय लोगों तथा उनकी संस्कृति का सम्मान करता है।

दिव्यांगजन और पर्यटन—

पर्यटन को वास्तव में समावेशी बनाने के लिए दिव्यांगजनों की आवश्यकताओं पर भी ध्यान देना होगा। आज भी अनेक पर्यटन स्थलों पर व्हीलचेयर के लिए उचित रास्ते, रैंप, सुलभ शौचालय, लिफ्ट, संकेतक और अन्य आवश्यक सुविधाओं का अभाव है। Accessible Tourism केवल दिव्यांगजनों के लिए सुविधा नहीं है; यह बुजुर्गों, छोटे बच्चों वाले परिवारों और अस्थायी रूप से चलने-फिरने में कठिनाई झेलने वाले लोगों के लिए भी उपयोगी है। यदि पर्यटन स्थल सभी के लिए सुलभ बनाए जाएँ तो पर्यटन का वास्तविक अर्थ-

सबको जोड़ना कृतार्थक होगा।

डिजिटल युग और पर्यटन—

इंटरनेट और सोशल मीडिया ने पर्यटन की दुनिया को पूरी तरह बदल दिया है। आज किसी व्यक्ति को किसी स्थान के बारे में जानने के लिए यात्रा एजेंट के पास जाने की आवश्यकता नहीं होती। मोबाइल फोन पर होटल, परिवहन, भोजन, मौसम, दर्शनीय स्थल और स्थानीय गतिविधियों की जानकारी मिल जाती है। सोशल मीडिया ने छोटे पर्यटन स्थलों के लिए भी नए अवसर पैदा किए हैं। किसी पर्यटक द्वारा बनाया गया एक अच्छा वीडियो या फोटो किसी अनजान स्थान को रातों-रात लोकप्रिय बना सकता है। इसलिए स्थानीय प्रशासन और पर्यटन व्यवसायों को डिजिटल माध्यमों का प्रभावी उपयोग करना चाहिए।

पर्यटन में रोजगार और युवाओं की भूमिका—

भारत जैसे युवा देश में पर्यटन रोजगार का महत्वपूर्ण क्षेत्र बन सकता है। युवाओं को स्थानीय गाइड, होटल प्रबंधन, ट्रेवल सेवाओं, डिजिटल मार्केटिंग, फोटोग्राफी, वीडियो निर्माण, हस्तशिल्प और साहसिक पर्यटन जैसे क्षेत्रों में अवसर मिल सकते हैं। विशेष रूप से छोटे शहरों के युवाओं को अपने क्षेत्र के इतिहास और संस्कृति का अध्ययन कर स्थानीय पर्यटन को नई पहचान देने का प्रयास करना चाहिए। एक प्रशिक्षित स्थानीय युवा अपने शहर की कहानी उस व्यक्ति से कहीं बेहतर तरीके से बता सकता है जो बाहर से आया हो।

भविष्य का पर्यटन—

भविष्य का पर्यटन केवल बड़े शहरों और प्रसिद्ध स्मारकों तक सीमित नहीं रहेगा। लोग अब भीड़ से दूर प्रकृति, ग्रामीण जीवन, आध्यात्मिकता, स्थानीय भोजन, संस्कृति और अनुभव आधारित यात्राओं की ओर आकर्षित हो रहे हैं। आने वाले समय में ग्रामीण पर्यटन, आध्यात्मिक पर्यटन, चिकित्सा पर्यटन, इको-टूरिज्म, विरासत पर्यटन और साहसिक पर्यटन का महत्व और बढ़ सकता है।

इसके लिए आवश्यक है कि पर्यटन का विकास केवल पर्यटकों की संख्या बढ़ाने के लक्ष्य तक सीमित न रहे। महत्वपूर्ण यह है कि पर्यटक बेहतर अनुभव लेकर लौटें, स्थानीय लोगों की आय बढ़े और प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विरासत सुरक्षित रहे।

विश्व वृद्धजन दिवस: उम्र नहीं, अनुभव की पूंजी का सम्मान

समय कभी रुकता नहीं। बचपन युवावस्था में बदलता है, युवावस्था प्रौढ़ावस्था में और फिर जीवन धीरे-धीरे वृद्धावस्था की ओर बढ़ता है। यह जीवन का स्वाभाविक क्रम है। फिर भी आधुनिक समाज में वृद्धावस्था को अक्सर कमजोरी, निर्भरता और अकेलेपन से जोड़कर देखा जाने लगा है। जबकि सच यह है कि बुजुर्ग किसी भी समाज की जीवित स्मृति, अनुभव की पाठशाला और संस्कारों की विरासत होते हैं। प्रतिवर्ष 1 अक्टूबर को अंतरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस मनाया जाता है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि वृद्धजन केवल देखभाल के पात्र नहीं, बल्कि सम्मान, सहभागिता और निर्णय लेने के अधिकार रखने वाले समाज के महत्वपूर्ण सदस्य हैं।

उम्र बढ़ना समस्या नहीं, जीवन की उपलब्धि है—

वृद्ध होना प्रकृति का नियम है। आज जो युवा है, वह कल वृद्ध होगा। इसलिए वृद्धजनों को समाज से अलग किसी वर्ग के रूप में देखने के बजाय जीवन के उस पड़ाव के रूप में देखना चाहिए, जिसकी ओर हम सभी आगे बढ़ रहे हैं। वृद्ध व्यक्ति ने अपने जीवन के कई दशक परिवार, समाज और राष्ट्र को दिए होते हैं। उन्होंने कठिन परिस्थितियों का सामना किया होता है, असफलताओं से सीखा होता है और अनेक अनुभवों को अपने भीतर संजोया होता है। उनकी कहानियाँ केवल अतीत की बातें नहीं होतीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए जीवन के महत्वपूर्ण सबक होती हैं।

बदलता परिवार और बढ़ता अकेलापन—

भारतीय समाज में कभी संयुक्त परिवार व्यवस्था बुजुर्गों के लिए स्वाभाविक सुरक्षा कवच हुआ करती थी। घर में दादा-दादी और नाना-नानी केवल परिवार के वरिष्ठ सदस्य नहीं होते थे, बल्कि बच्चों के मित्र, मार्गदर्शक और संस्कारों के स्रोत भी होते थे। लेकिन शहरीकरण, रोजगार के लिए पलायन, छोटे परिवार और बदलती जीवनशैली ने पारिवारिक संरचना को काफी बदल दिया है। अनेक बुजुर्ग ऐसे हैं जिनके बच्चे दूसरे शहरों या देशों में रहते हैं। कुछ बुजुर्ग आर्थिक रूप से सक्षम होने के बावजूद भावनात्मक अकेलेपन का सामना करते हैं। यहाँ एक महत्वपूर्ण

अंतर समझना होगा— अकेले रहना और अकेला महसूस करना एक बात नहीं है। किसी बुजुर्ग के पास घरएँ पैसा और सुविधाएँ हो सकती हैं, लेकिन यदि उससे बात करने वाला, उसकी बात सुनने वाला और उसके अनुभव को महत्व देने वाला कोई नहीं है, तो उसका अकेलापन बहुत गहरा हो सकता है।

बुजुर्गों को दया नहीं, सम्मान चाहिए—

वृद्धजनों के प्रति हमारा दृष्टिकोण बदलने की आवश्यकता है। उन्हें केवल दया या सहायता का पात्र समझना उनके व्यक्तित्व को सीमित कर देता है। उन्हें यह महसूस होना चाहिए कि वे अभी भी परिवार और समाज के लिए उपयोगी हैं। घर के छोटे-बड़े निर्णयों में उनकी राय लेना, उनके अनुभवों को सुनना, उनके साथ समय बिताना और उनकी पसंद-नापसंद का सम्मान करना छोटी बातें लग सकती हैं, लेकिन इनके भीतर भावनात्मक सुरक्षा छिपी होती है। कई बार बुजुर्गों की सबसे बड़ी आवश्यकता दवा या पैसा नहीं, बल्कि दो शब्द बातचीत और यह एहसास होता है कि कोई उन्हें सुनना चाहता है।

तकनीक से दूरी नहीं, तकनीक से दोस्ती—

डिजिटल युग ने बुजुर्गों के सामने नई चुनौती भी पैदा की है और नया अवसर भी। मोबाइल फोन, वीडियो कॉल, डिजिटल बैंकिंग, ऑनलाइन सेवाएँ और सोशल मीडिया उनके जीवन को आसान बना सकते हैं। लेकिन तकनीक की जानकारी का अभाव उन्हें दूसरों पर निर्भर बना देता है। परिवार के युवा यदि अपने बुजुर्गों को मोबाइल चलाना, वीडियो कॉल करना, ऑनलाइन भुगतान करना और डिजिटल सेवाओं का सुरक्षित उपयोग सिखाएँ, तो यह उनके आत्मविश्वास को बढ़ा सकता है। यह भी जरूरी है कि उन्हें डिजिटल धोखाधड़ी से बचने के लिए जागरूक किया जाए। उम्रदराज लोगों को तकनीक से दूर रखने के बजाय तकनीक का सुरक्षित और आत्मनिर्भर उपयोग सिखाना समय की आवश्यकता है।

सक्रिय वृद्धावस्था: जीवन का नया अध्याय—

वृद्धावस्था का अर्थ जीवन का अंत नहीं है। यह जीवन को नए तरीके से जीने का अवसर भी हो सकता है।

कई बुजुर्ग इस उम्र में लेखन, संगीत, योग, बागवानी, धार्मिक और सामाजिक गतिविधियों, यात्रा, शिक्षण या सामुदायिक सेवा से जुड़ते हैं। कुछ अपने पुराने हुनर को फिर से जीवित करते हैं तो कुछ नई चीजें सीखते हैं। समाज को भी ऐसे अवसर पैदा करने चाहिए जहाँ बुजुर्ग अपनी प्रतिभा और अनुभव का उपयोग कर सकें। विद्यालयों और महाविद्यालयों में वरिष्ठ नागरिकों को आमंत्रित कर उनके अनुभव विद्यार्थियों से साझा करवाए जा सकते हैं। स्थानीय संस्थाएँ उनके लिए पुस्तक क्लब, सांस्कृतिक कार्यक्रम, स्वास्थ्य जागरूकता और मनोरंजन गतिविधियाँ आयोजित कर सकती हैं।

वृद्धजन और आर्थिक आत्मनिर्भरता—

वृद्धावस्था में आर्थिक सुरक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण है। पेंशन, बचत और सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ बुजुर्गों को आत्मनिर्भर बनाने में बड़ी भूमिका निभाती हैं। लेकिन केवल आर्थिक सुरक्षा पर्याप्त नहीं है। हमें ऐसा वातावरण बनाना होगा जिसमें बुजुर्ग अपनी क्षमता के अनुसार काम करना चाहें तो उन्हें अवसर मिले। अनुभव रखने वाले वरिष्ठ नागरिक सलाहकार प्रशिक्षक, मार्गदर्शक या स्वयंसेवक के रूप में समाज को बहुत कुछ दे सकते हैं। उम्र के साथ कार्यक्षमता बदल सकती है, लेकिन उपयोगिता समाप्त नहीं होती।

वृद्धजन और सम्मानजनक सार्वजनिक जीवन—

शहरों और सार्वजनिक स्थानों की योजना बनाते समय बुजुर्गों की जरूरतों को ध्यान में रखना आवश्यक है। सुरक्षित फुटपाथ, बैठने की जगह, सुगम सार्वजनिक परिवहन, पर्याप्त प्रकाश, सुलभ शौचालय और स्वास्थ्य सुविधाएँ उनके जीवन को अधिक स्वतंत्र बना सकती हैं। वृद्धजन-अनुकूल शहर वास्तव में सभी आयु वर्गों के लिए बेहतर शहर होते हैं। जिस शहर में बुजुर्ग सुरक्षित और सम्मान के साथ चल सकते हैं, वहाँ बच्चे, दिव्यांगजन और अन्य कमजोर वर्ग भी अधिक सुरक्षित महसूस करते हैं।

नई पीढ़ी की जिम्मेदारी—

वृद्धजनों के प्रति सम्मान केवल किसी एक दिवस तक सीमित नहीं होना चाहिए। परिवार में बच्चों को छोटी उम्र से ही यह सिखाना जरूरी है कि दादा-दादी या परिवार के अन्य वरिष्ठ

सदस्य बोझ नहीं हैं। कभी उनके साथ बैठकर पुरानी यादें सुनना, उनके पुराने फोटो देखना, उनके साथ भोजन करना, डॉक्टर के पास ले जाना या केवल कुछ समय उनके पास बैठना- ये सभी प्रेम के छोटे लेकिन प्रभावशाली रूप हैं। हमें यह भी याद रखना चाहिए कि जिस व्यवहार की अपेक्षा हम अपने बच्चों से भविष्य में करेंगे, वही व्यवहार हमें आज अपने बुजुर्गों के साथ करना होगा।

निष्कर्ष—

विश्व वृद्धजन दिवस केवल बुजुर्गों को शुभकामनाएँ देने का दिन नहीं है। यह आत्मचिंतन का दिन है। यह पूछने का दिन है कि हमारे आसपास रहने वाले बुजुर्ग वास्तव में कितने खुश हैं? क्या वे अपने निर्णय स्वयं ले पा रहे हैं? क्या परिवार में उनकी बात सुनी जाती है? क्या समाज में उन्हें सम्मान और सहभागिता मिल रही है? किसी समाज की प्रगति का मूल्यांकन केवल उसकी ऊँची इमारतों, तकनीक और आर्थिक विकास से नहीं किया जा सकता। यह भी देखना होगा कि वह समाज अपने बच्चों, महिलाओं, दिव्यांगजनों और वृद्धजनों के साथ कैसा व्यवहार करता है। वृद्धजन हमारे अतीत की स्मृति ही नहीं, वर्तमान के मार्गदर्शक और भविष्य के लिए अनुभव की अमूल्य पूंजी हैं। इसलिए हमें ऐसा समाज बनाना होगा जहाँ बुजुर्ग जीने के लिए जगह नहीं, बल्कि सम्मान के साथ जीने का अधिकार महसूस करें। क्योंकि उम्र चेहरे पर दिखाई दे सकती है, लेकिन अनुभव की रोशनी कभी बूढ़ी नहीं होती।



अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस

के अक्सर पर देश व प्रदेश के
सभी वृद्धजनों को हार्दिक शुभकामनाएँ

गांधी को याद करने से आगे, गांधी को समझने की जरूरत

‘मेरा जीवन ही मेरा संदेश है... : मोहनदास कर्मचन्द गांधी’

महात्मा गांधी का यह कथन केवल एक प्रेरक वाक्य नहीं, बल्कि उनके पूरे जीवन-दर्शन का सार है। गांधीजी ने जो कहा, उसे अपने जीवन में उतारने का प्रयास किया। उन्होंने सत्य को केवल भाषण का विषय नहीं बनाया, अहिंसा को केवल आदर्श नहीं माना और स्वराज को केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं रखा। उनके लिए स्वतंत्रता का अर्थ था- ऐसा समाज जिसमें व्यक्ति भय से मुक्त हो, गरीब को सम्मान मिले, श्रम की प्रतिष्ठा हो और मनुष्य मनुष्य से घृणा न करे।

प्रतिवर्ष 2 अक्टूबर को गांधी जयंती मनाई जाती है। भारत में यह दिन राष्ट्रीय महत्व का है और विश्व स्तर पर भी यह दिन अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में जाना जाता है। लेकिन सवाल यह है कि गांधी जयंती के अवसर पर हम वास्तव में गांधी को कितना याद करते हैं और कितना समझते हैं?

गांधी: एक व्यक्ति नहीं, एक विचार—

मोहनदास कर्मचंद गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर में हुआ था। साधारण परिवार से निकलकर उन्होंने कानून की पढ़ाई की और दक्षिण अफ्रीका में अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण अध्याय बिताया। वहीं उन्होंने नस्लीय भेदभाव का सामना किया और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष का रास्ता खोजा। भारत लौटने के बाद गांधी स्वतंत्रता आंदोलन के ऐसे नेता बने जिन्होंने राजनीति को आम आदमी के जीवन से जोड़ दिया। किसान, मजदूर, महिलाएँ, व्यापारी, विद्यार्थी और समाज के वंचित वर्ग- सभी को उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन का सहभागी बनाया। गांधीजी की सबसे बड़ी शक्ति उनकी सादगी थी। वे स्वयं को जनता से अलग नहीं करते थे। उनका पहनावा, भोजन, जीवनशैली और रहन-सहन इस बात का संदेश था कि नेतृत्व का अर्थ जनता से ऊपर उठ जाना नहीं, बल्कि जनता के बीच खड़ा होना है।

सत्याग्रह: अन्याय के विरुद्ध आत्मबल—

गांधीजी ने संघर्ष का एक अनोखा तरीका दुनिया को दिया- सत्याग्रह! सत्याग्रह का अर्थ केवल विरोध या आंदोलन

नहीं था। यह सत्य और नैतिक शक्ति के आधार पर अन्याय का सामना करने का मार्ग था। गांधीजी मानते थे कि अन्याय का विरोध आवश्यक है, लेकिन विरोध करने वाले के भीतर भी हिंसा और घृणा नहीं होनी चाहिए। उनका संघर्ष व्यक्ति के विरुद्ध नहीं, अन्याय के विरुद्ध था। आज जब सार्वजनिक जीवन में असहमति को अक्सर दुश्मनी समझ लिया जाता है, गांधी का सत्याग्रह हमें याद दिलाता है कि मतभेद लोकतंत्र की कमजोरी नहीं, उसकी स्वाभाविक विशेषता है।

अहिंसा की प्रासंगिकता—

गांधीजी की अहिंसा को कई बार केवल शारीरिक हिंसा से जोड़कर देखा जाता है। जबकि गांधी की अहिंसा इससे कहीं व्यापक थी। किसी के प्रति घृणा, अपमान, बदला और मन में हिंसक भावना भी उनके लिए अहिंसा की भावना के विपरीत थी। आज सोशल मीडिया के दौर में शब्दों की हिंसा तेजी से बढ़ी है। किसी विचार से असहमति होते ही व्यक्ति पर व्यक्तिगत टिप्पणी, अपमान और चरित्र पर सवाल उठाना सामान्य होता जा रहा है। ऐसे समय में गांधी की अहिंसा का अर्थ और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। हमें यह सीखने की आवश्यकता है कि किसी विचार का विरोध किया जा सकता है, बिना उस विचार को रखने वाले व्यक्ति से घृणा किए।

स्वच्छता: गांधी का अधूरा सपना—

गांधीजी स्वच्छता को केवल सफाई कर्मचारी या सरकार की जिम्मेदारी नहीं मानते थे। उनके लिए स्वच्छता व्यक्तिगत अनुशासन और सामाजिक जिम्मेदारी दोनों थी। आज देश में स्वच्छता को लेकर बड़े अभियान चलाए जा रहे हैं। लेकिन वास्तविक स्वच्छता केवल सड़क पर झाड़ू लगाने से नहीं आएगी। जब तक हम कूड़ा सड़क पर फेंकना, सार्वजनिक स्थानों को गंदा करना और अपनी सुविधा के लिए दूसरों के हिस्से में गंदगी छोड़ना बंद नहीं करेंगे, तब तक स्वच्छता अधूरी रहेगी। गांधीजी की दृष्टि में स्वच्छता बाहर से पहले भीतर की आदतों में दिखाई देनी चाहिए।

ग्राम स्वराज और आत्मनिर्भरता —

गांधीजी भारत के विकास का केंद्र गाँवों को मानते थे। उनका सपना ऐसा ग्राम स्वराज था जहाँ स्थानीय समुदाय अपने निर्णयों में सक्षम हो, स्थानीय संसाधनों का उपयोग करे और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने की दिशा में आगे बढ़े। आज भारत तेजी से शहरीकरण और डिजिटल अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ रहा है। फिर भी गांधी का स्थानीयता पर जोर अप्रासंगिक नहीं हुआ है। स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देना, छोटे उद्यमों को मजबूत करना, किसानों और कारीगरों को उचित बाजार उपलब्ध कराना तथा स्थानीय रोजगार पैदा करना आज भी महत्वपूर्ण है। आत्मनिर्भरता का अर्थ दुनिया से कट जाना नहीं, बल्कि अपनी क्षमता पर विश्वास करना है।

गांधी और आर्थिक समानता —

गांधीजी अत्यधिक आर्थिक असमानता को लेकर चिंतित थे। उनका 'ट्रस्टीशिप' का विचार कहता था कि जिन लोगों के पास अधिक संपत्ति और संसाधन हैं, उन्हें समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझनी चाहिए। आज दुनिया में आर्थिक विकास के साथ-साथ असमानता भी एक बड़ी चुनौती है। एक ओर अत्याधुनिक तकनीक और संपन्नता है, तो दूसरी ओर बड़ी संख्या में लोग अभी भी बुनियादी सुविधाओं के लिए संघर्ष कर रहे हैं। गांधी का विचार हमें याद दिलाता है कि विकास का वास्तविक मूल्यांकन केवल इस बात से नहीं होना चाहिए कि देश कितना अमीर हुआ, बल्कि इससे भी होना चाहिए कि उस विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक कितना पहुँचा।

गांधी और अंतिम व्यक्ति —

गांधीजी के चिंतन में 'अंतिम व्यक्ति' का विशेष स्थान था। वे निर्णय लेते समय यह विचार करने की बात करते थे कि हमारे कदम का प्रभाव उस सबसे गरीब और कमजोर व्यक्ति पर क्या पड़ेगा। आज जब नीतियाँ और योजनाएँ तकनीक, अर्थव्यवस्था और

बड़े विकास प्रोजेक्टों के इर्द-गिर्द बनती हैं, तब यह कसौटी अत्यंत उपयोगी हो सकती है। यदि किसी विकास कार्य से हजारों लोगों को लाभ हो रहा है लेकिन कुछ कमजोर लोगों के अधिकार और जीवन प्रभावित हो रहे हैं, तो उनके हितों पर भी गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए।

गांधी को मूर्ति में नहीं, व्यवहार में खोजें —

गांधी जयंती के दिन हम गांधीजी की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण करते हैं, उनके चित्रों पर पुष्प अर्पित करते हैं और उनके विचारों को याद करते हैं। यह सम्मान आवश्यक है, लेकिन पर्याप्त नहीं। गांधी को सच्ची श्रद्धांजलि तब होगी जब हम अपने दैनिक जीवन में सत्य बोलने का साहस करें, कमजोर व्यक्ति के साथ सम्मान से व्यवहार करें, असहमति को स्वीकार करें, हिंसा और घृणा से बचें, सार्वजनिक संपत्ति को अपना समझें और अपने हिस्से की जिम्मेदारी निभाएँ। गांधी को समझने के लिए किसी बड़े आंदोलन की आवश्यकता नहीं है। कभी-कभी गांधी हमारे छोटे-छोटे व्यवहारों में दिखाई दे सकते हैं- जब हम सड़क पर पड़ा कचरा उठाते हैं, जब किसी बुजुर्ग की मदद करते हैं, जब किसी गरीब के साथ सम्मान से बात करते हैं, जब गलत होते हुए भी अपनी गलती स्वीकार करते हैं या जब बदले की जगह संवाद का रास्ता चुनते हैं।

आज के भारत को गांधी की कितनी जरूरत है —

यह प्रश्न महत्वपूर्ण है। आज हमारे पास विज्ञान है, तकनीक है, तेज संचार है और विकास की नई संभावनाएँ हैं। लेकिन इसके साथ तनाव, असहिष्णुता, सामाजिक विभाजन, उपभोक्तावाद और पर्यावरण संकट जैसी चुनौतियाँ भी हैं। ऐसे समय में गांधी हमारे विकास को रोकने नहीं, बल्कि उसे मानवीय दिशा देने की याद दिलाते हैं। गांधी हमें यह नहीं कहते कि आधुनिकता छोड़कर अतीत में लौट जाओ। वे हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करते हैं कि आधुनिकता के साथ मानवीयता कैसे बची रहे।



भूतेश्वर महादेव मन्दिर प्राणप्रतिष्ठा कार्यक्रम

नवधृति मानवाधिकार फाउण्डेशन का सहयोग





बालोतरा जिले को नई पत्रकारिता दिशा देने की पहल

भैरूलाल जी गहलोत ने औद्योगिक व्यवसाय के साथ पत्रकारिता क्षेत्र में भी नई जिम्मेदारी संभाली

बालोतरा, विशेष संवाददाता। बालोतरा जिले में उद्योग और सामाजिक सरोकारों से जुड़े क्षेत्र में अपनी पहचान रखने वाले भैरूलाल जी गहलोत ने अगस्त माह में पत्रकारिता के क्षेत्र में भी नई जिम्मेदारी के साथ

अपनी नई शुरुआत की है। औद्योगिक कपड़ा व्यवसाय से जुड़े भैरूलाल जी गहलोत अब नवधृति मानवाधिकार समाचार के साथ पत्रकारिता के क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभाने जा रहे हैं। बालोतरा राजस्थान के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों में शामिल है और कपड़ा उद्योग यहां की अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा है। ऐसे क्षेत्र में लंबे समय से व्यवसाय से जुड़े होने के कारण भैरूलाल जी गहलोत को स्थानीय उद्योग, व्यापार और क्षेत्र की सामाजिक परिस्थितियों की अच्छी समझ है। पत्रकारिता के क्षेत्र में उनकी नई शुरुआत का उद्देश्य बालोतरा जिले से जुड़े औद्योगिक, व्यापारिक, सामाजिक, जनहित एवं स्थानीय समस्याओं से संबंधित समाचारों को प्रमुखता से सामने लाना है। नवधृति मानवाधिकार समाचार के साथ जुड़कर वे स्थानीय स्तर पर आमजन की समस्याओं, प्रशासनिक गतिविधियों, सामाजिक कार्यक्रमों और उद्योग जगत से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों को समाचार के माध्यम से सामने रखने का प्रयास करेंगे।

व्यवसाय से पत्रकारिता तक नई जिम्मेदारी —

भैरूलाल जी गहलोत का औद्योगिक कपड़ा व्यवसाय से जुड़ा अनुभव पत्रकारिता में उनके लिए उपयोगी साबित हो सकता है। व्यापार और उद्योग क्षेत्र की जमीनी परिस्थितियों को समझने के साथ वे बालोतरा के विकास, रोजगार, उद्योगों की समस्याओं और स्थानीय व्यापारियों से जुड़े विषयों को व्यापक मंच देने में योगदान कर सकते हैं।

उनकी यह नई भूमिका बालोतरा जिले में व्यापार, उद्योग और जनहित की आवाज को पत्रकारिता के माध्यम से मजबूती देने की दिशा में एक सकारात्मक पहल के रूप में देखी जा रही है। नवधृति मानवाधिकार समाचार परिवार की ओर से शुभकामनाएं नवधृति मानवाधिकार समाचार परिवार की ओर से भैरूलाल जी गहलोत को पत्रकारिता के नए दायित्व के लिए हार्दिक शुभकामनाएं। हम आशा करते हैं कि वे पत्रकारिता के मूल सिद्धांतों- सत्य, निष्पक्षता, तथ्यपरकता और जनहित को प्राथमिकता देते हुए बालोतरा जिले की आवाज को मजबूती से सामने लाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

-संपादकीय विभाग, नवधृति मानवाधिकार समाचार

NMS.NEWS



अनुभव और सामाजिक सरोकार के साथ पत्रकारिता की नई शुरुआत

मदन मोहन मिश्रा- अनूपपुर-जैतहरी, मध्यप्रदेश के संवाददाता

नवधृति मानवाधिकार समाचार के लिए अनूपपुर-जैतहरी, मध्य प्रदेश से संवाददाता के रूप में मदनमोहन मिश्रा ने अपनी नई जिम्मेदारी संभाली है। स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक क्षेत्र में कार्य करने का उनका

अनुभव पत्रकारिता के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान देने की क्षमता रखता है। मदनमोहन मिश्रा ने भोपाल से फार्मैसी की शिक्षा प्राप्त की है। इसके पश्चात उन्होंने स्वास्थ्य एवं सामाजिक क्षेत्र से जुड़े महत्वपूर्ण कार्यों में अपनी सेवाएं दीं। उन्होंने भोपाल में **National AIDS Control Organisation (NACO)** से जुड़े कार्यों में कोऑर्डिनेटर के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान कीं। इस दौरान स्वास्थ्य जागरूकता, समन्वय और सामाजिक क्षेत्र से संबंधित कार्यों का उन्हें व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हुआ।

इसके साथ ही उन्होंने हरूभोपाल के अंतर्गत ब्रह्म नर्सिंग कोर्स में छात्राओं को **Anatomy** एवं **Physiology** विषय पर व्याख्यान भी दिए। शिक्षण के इस अनुभव के माध्यम से उन्होंने छात्राओं को मानव शरीर की संरचना एवं शरीर की विभिन्न सिस्टमों से संबंधित विषयों की जानकारी प्रदान की।

पत्रकारिता के माध्यम से जनहित की आवाज —

स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक क्षेत्र का यह अनुभव अब पत्रकारिता के क्षेत्र में भी उपयोगी साबित हो सकता है। अनूपपुर एवं जैतहरी क्षेत्र से वे स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार, महिला एवं बाल विकास, सामाजिक सरोकार, प्रशासनिक गतिविधियों और जनसमस्याओं से जुड़े विषयों को प्रमुखता से सामने रखने का प्रयास करेंगे। उनकी पत्रकारिता का उद्देश्य स्थानीय स्तर की उन समस्याओं और सकारात्मक पहलों को सामने लाना होगा जिनका सीधा संबंध आम नागरिकों से है।

अनुभव से पत्रकारिता तक —

फार्मैसी शिक्षा, स्वास्थ्य क्षेत्र में कार्य का अनुभव तथा नर्सिंग छात्राओं को शिक्षण देने की पृष्ठभूमि मदनमोहन मिश्रा को स्वास्थ्य एवं सामाजिक विषयों को समझने का एक मजबूत आधार प्रदान करती है। नवधृति मानवाधिकार समाचार परिवार की ओर से मदन मोहन मिश्रा को नई जिम्मेदारी के लिए हार्दिक शुभकामनाएं। आशा है कि वे पत्रकारिता के मूल सिद्धांतों- सत्य, निष्पक्षता, तथ्यपरकता और जनहित को प्राथमिकता देते हुए अनूपपुर- जैतहरी क्षेत्र की आवाज को मजबूती से सामने लाएंगे।

‘अनुभव की समझ, तथ्यों की पत्रकारिता और जनहित की आवाज।’

BHUMI

MARKETING

Digital Ideas, Powerful Solutions

आज ही अपने व्यापार को बनाएं डिजिटल

Bhumi Marketing

YOUR GROWTH, OUR MISSION



अब समय है
अपने बिजनेस को
ऑनलाइन पहचान, अधिक ग्राहक
और अधिक बिक्री देने का।

- 9887700059
- www.bhumi.marketing
- Support@bhumi.marketing
- Whatsapp
- Google Map
- SMS
- Facebook
- Instagram
- Website
- E-mail

BHUMI MARKETING – आपकी डिजिटल सफलता का पूरा समाधान

01 WEBSITE DEVELOPMENT - Custom Website Design - Responsive Design - User Friendly - SEO Friendly	02 SEO SERVICES - On-Page SEO - Off-Page SEO - Technical SEO - Keyword Research	03 SOCIAL MEDIA MARKETING - Page Management - Content Creation - Audience Engagement - Brand Awareness	04 GOOGLE ADS - Search Ads - Display Ads - Shopping Ads - Lead Generation
05 META ADS - Facebook Ads - Instagram Ads - Audience Targeting - Retargeting Ads	06 CRM & IVR SERVICES - Customer Management - Lead Management - IVR Setup & Management - Business Automation	07 WHATSAPP API & AUTOMATION - WhatsApp API Integration - Auto Reply / Chatbot - Bulk Messaging - Smart Automation	08 BULK SMS RCS - Transactional SMS - Promotional SMS - RCS Messaging - Bulk SMS Campaign

OUR CORE SERVICES

1. Digital Marketing – ब्रांड को बढ़ाएं, ग्राहक बढ़ाएं, बिक्री बढ़ाएं।
2. Website Development – प्रोफेशनल वेबसाइट जो आपके बिजनेस को नई पहचान दे।
3. WhatsApp Marketing – सीधे ग्राहक से जुड़ें, तेजी से अपने संदेश पहुंचाएं।
4. C.R.M. (Customer Relationship Management) – ग्राहक संबंधों को मजबूत करें, बिजनेस बढ़ाएं।
5. I.V.R. (Interactive Voice Response) – प्रोफेशनल कॉल हैंडलिंग, बेहतर ग्राहक अनुभव।
6. Whatsapp API & Automation – ऑटोमेशन से समय बचाएं, बढ़ाएं प्रोडक्टिविटी।
7. Bulk SMS RCS (Transactional & Promotional) – एक साथ हजारों ग्राहकों तक अपनी बात पहुंचाएं।

Why Bhumi Marketing?

- ✓ WhatsApp & WhatsApp API
- ✓ Google Business & Google Maps
- ✓ SMS & Email Marketing
- ✓ Facebook & Instagram Ads
- ✓ Website + CRM + IVR Integration

कम बजट में बेहतरीन परिणाम

- छोटे व्यापार से लेकर बड़ी कंपनी तक समाधान
- लीड से लेकर सेल तक पूरा सिस्टम
- हर बिजनेस के लिए अलग डिजिटल रणनीति

आज ही अपने बिजनेस को डिजिटल बनाएं !

- वेबसाइट
- डिजिटल मार्केटिंग
- ब्रांड्स अप ऑटोमेशन
- CRM, IVR
- लीड सिस्टम



आज ही
Free Consultation
हेतु कॉल करें-

9887700059

9887700059
www.bhumi.marketing
Support@bhumi.marketing

— छोटे कदम बड़े सपनों की ओर — SINCE 1999 —

JAI JASOL
— DEVELOPERS —**पचपदस**
रिफाइनरी

— के आसपास में —

बड़ी ज़मीन व प्लॉट
लेने के लिए

वह तरह के जमीन के कंसल्टेंट्स के लिए संपर्क करें

**बड़ी जमीन उपलब्ध**औद्योगिक, कमर्शियल एवं निवेश के लिए
उपयुक्त भूमि उपलब्ध।**निवेश के लिए बेहतरीन लोकेशन**रिफाइनरी के पास - भविष्य के लिए
सुनहरा अवसर।**उचित मार्गदर्शन एवं पारदर्शी डील**अनुभवी कंसल्टेंट्स द्वारा सुरक्षित
और पारदर्शी व्यवहार।**खरीद एवं बिक्री दोनों की सुविधा**खरीदने और बेचने - दोनों के लिए
संपूर्ण सहायता।

प्राइम लोकेशन



सुरक्षित निवेश



उचित मूल्य



समय पर डील

**संपर्क करें****95499 95777**www.jaijasold.org.ininfo@jaijasold.org.in



Navdhriti **Manavadhikar** Foundation



Trusted Financial
Solutions Partner

PRIVATE FUNDING

**EQUITY-BASED FUNDING
OPTIONS AVAILABLE**

Low CIBIL / NPA / OTS
cases accepted



Low CIBIL / NPA /
OTS cases accepted



ROI 9-13%
Reducing



Collateral Value
0-80% eligibility



PAN India
Reach



**TRANSPARENT &
DOCUMENTED PROCESS**



**GET IN TOUCH TODAY
FOR YOUR FUNDING NEEDS**

9251120059



Quick
Evaluation



Minimal
Documentation



Flexible
Support



Faster
Process

सामान्य ज्ञान—

राजस्थान संक्षिप्त परिचय

151. राजस्थान का प्रथम कृषि विज्ञान केन्द्र कहाँ स्थित है?

उत्तर— फतेहपुर, सीकर में

152. अरावली का न्यूनतम विस्तार किस जिले में है?

उत्तर— अजमेर

153. अरावली का सर्वाधिक विस्तार किस जिले में है?

उत्तर— उदयपुर

154. पश्चिमी राजस्थान में वर्षा के पानी से बनी अस्थायी झीलें व दलदली भूमि क्या कहलाती है?

उत्तर— रन/टाट क्षेत्र

155. टॉड रॉक, नन-रॉक स्थित हैं?

उत्तर— माउण्ट आबू (सिरोही) में

156. मध्यवर्ती अरावली श्रेणी में स्थित दर्रे व पहाड़ी मार्ग को क्या कहते हैं?

उत्तर— नाल

157. घग्घर नदी का पाट कहलाता है ?

उत्तर— नाली

158. मेवात प्रदेश कहलाता है?

उत्तर— अलवर

159. बंगाल की खाड़ी से आने वाली मानसूनी पवनें क्या कहलाती हैं?

उत्तर— पुरवड़ियाँ

160. उदयपुर के तश्तरीनुमा पहाड़ी क्षेत्र का भाग?

उत्तर— गिरवा

161. सिरोही में स्थित टेढ़ी-मेढ़ी पहाड़ियाँ?

उत्तर— भाखर

162. पवनों की दिशा में समकोण बनाने वाले बालुका स्तूप?

उत्तर— अनुप्रस्थ

163. पवनों की दिशा में समानान्तर बनाने वाले बालुका स्तूप कहलाते हैं?

उत्तर— अनुदैर्घ्य

164. सर्वाधिक तापांतर वाला क्षेत्र कौनसा है?

उत्तर— पश्चिमी राजस्थान

165. गर्मियों में सर्वाधिक गर्मी वाला जिला कौनसा है?

उत्तर— चुरू

166. गर्मियों में सर्वाधिक आँधिया किस जिले में आती हैं?

उत्तर— गंगानगर में

167. गर्मियों में न्यूनतम आँधियों वाला जिला कौन-सा है?

उत्तर— झालावाड़

168. राजस्थान का सर्वाधिक सिंचित क्षेत्रफल?

उत्तर— श्री गंगानगर का

169. खेजड़ी का स्थानीय नाम क्या है?

उत्तर— जौंटी

170. राजस्थान में प्रमुखता से पाये जाने वाला जहरीला साँप है?

उत्तर— पीवणा

171. राजस्थान में सर्वाधिक सिंचाई किस माध्यम से होती है?

उत्तर— कुओं व नलकुपों द्वारा

172. तालाबों द्वारा सर्वाधिक सिंचाई वाला जिला कौनसा है?

उत्तर— भीलवाड़ा

173. मिट्टी में खारेपन व क्षारीयता की समस्या का समाधान क्या है?

उत्तर— जिप्सम का प्रयोग

174. सर्वाधिक शुष्क स्थान ?

उत्तर— फलोदी

175. काजरी राजस्थान के किस जिले में स्थित है?

उत्तर— जोधपुर में

176. राजस्थान का मृगवन माचिया सफारी पार्क किस जिले में है?

उत्तर- जोधपुर में

177. राजस्थान को मरूकांतर की संज्ञा किसने दी है?

उत्तर- वाल्मीकि ने

178. थार का कल्पवृक्ष है?

उत्तर- खेजड़ी

179. खेजड़ी का वैज्ञानिक नाम क्या है?

उत्तर- प्रोसेसिप सीनेरिया

180. राजस्थान का राज्य वृक्ष है?

उत्तर- खेजड़ी

181. राज्य पुष्प जिसे राजस्थान का सागवान कहा जाता है?

उत्तर- रोहिड़ा

182. राजस्थान का वह जिला, जहां उष्ण कटिबन्धीय शुष्क पर्णपाती वन पाये जाते हैं, वह है?

उत्तर- सिरोही

183. रोहिड़ा के फूल का वैज्ञानिक नाम क्या है?

उत्तर- टिकूमेला अंडुलेटा

184. कौनसा फूल मारवाड़ टीक नाम से जाना जाता है?

उत्तर- रोहिड़ा का फूल

185. राजस्थान का राज्य पक्षी है?

उत्तर- गोडावण

186. किस जिले का सम्बन्ध सेवण घास है?

उत्तर- जैसलमेर

187. राजस्थान में सागवान वनों के लिए कौनसा जिला प्रसिद्ध है?

उत्तर- बाँसवाड़ा

188. राजस्थान के पश्चिमी भाग में वन किस रूप में है?

उत्तर- वन, काटेदार पेड़ व झाड़ियों के रूप में

189. खेजड़ी वृक्ष की पूजा किस पर्व पर की जाती है?

उत्तर- दशहरा

190. राज्य पुष्प रोहिड़ा राजस्थान के किस भाग में सर्वाधिक पाया जाता है?

उत्तर- पश्चिमी राजस्थान

191. राजस्थान में सर्वाधिक वन क्षेत्र हैं?

उत्तर- उदयपुर व राजसमंद जिले

192. राजस्थान में बार-बार होने वाले 'सूखे एवं अकाल' का प्रमुख कारण है?

उत्तर- अनियमित वर्षा

193. राजस्थान में वनों की कमी का प्रमुख कारण है?

उत्तर- जलवायु परिवर्तन

194. अमृतादेवी स्मृति पुरस्कार किस लिए दिया जाता है?

उत्तर- वन एवं वन्य जीवों की सुरक्षा के लिए

195. भारत में सागवान के उत्पादन में निरन्तर कमी हो रही है, राजस्थान के वे कौन-से जिले हैं जो सागवान की वृद्धि में सहायक हैं?

उत्तर- बाँसवाड़ा व उदयपुर

196. प्राचीन एवं विशिष्ट प्रजातियों के वृक्षों की पहचान सुरक्षित करने के उद्देश्य से किस पुरस्कार की स्थापना की गई?

उत्तर- महावृक्ष पुरस्कार

197. राजस्थान का राज्य वृक्ष खेजड़ी है। यह राज्य में वन क्षेत्र के कितने भाग में पाए जाते हैं?

उत्तर- 2/3

198. राजस्थान के किस क्षेत्र में सागवान पाए जाते हैं?

उत्तर- दक्षिणी क्षेत्र में

199. 'रूख भायला' का अर्थ है?

उत्तर- वृक्ष मित्र से

200. 'सेवण घास' किस जिले में विस्तृत रूप से उगती है?

उत्तर- जैसलमेर में

क्रमशः

शेष प्रश्न अगले अंक में...

छोटे कदम बड़े सपनों की ओर | Since 1999

JAI JASOL

BUILDING MATERIAL



फैक्टरी से
सीधी सप्लाई



थोक रेट की
गारंटी



पूरे भारत में
डिलीवरी



भरोसे की
पहचान

हर ईंट में भरोसा,
हर सपने की
मजबूत नींव



हमारे प्रोडक्ट्स



सीमेंट



सरिया



मुंगिया



रेत



ईंट



टाइल्स



ब्लॉक्स



P.O.P.



AAC BLOCKS

हल्के, मजबूत और टिकाऊ निर्माण के लिए सर्वोत्तम विकल्प



बेहतरीन
क्वालिटी



प्रतिस्पर्धी
रेट



बड़े प्रोजेक्ट के लिए
विशेष ऑफर



पूरे भारत में
सप्लाई सुविधा



आज ही कॉल करें

9460087795
9887700059



www.jaijasolbm.org

